जोट्टा गाछ

(शृंखलाबद्ध प्रेम कविता-संग्रह)

कामिनी

नवारम्भ
मधुबनी/पटना/दिल्ली

ऑनलाइन बुक स्टोर **www.navarambh.com** पर पुस्तक उपलब्ध।

ISBN : 978-93-95420-86-0

जोट्टा गाछ
(मैथिली प्रेम कविता-संग्रह)

© कामिनी

प्रथम संस्करण : 2024
मूल्य : 200 रु.

आवरण पर : साभार

प्रकाशक
नवारम्भ
मधुबनी : श्री भवन, वार्ड न.-5
निकट राम-जानकी मन्दिर, बिहार- 847211
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
दिल्ली एनसीआर : प्लॉट एच. एस.-2, ब्लॉक एफ
सेक्टर-अल्फा-2, ग्रेटर नोएडा-201308
Email : navarambhprakashan@gmail.com
मो॰- 09304349384

मुद्रक
आर. के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली

Jotta Gachh
A Collection Of Maithili Poems By **kamini**
First Edition : 2024, Price : Rs 200/-

ई पोथी हम हुनका सभकेँ
समर्पित करैत छियैन
जे हमरासँ प्रेम करैत छथि
जिनकासँ हम प्रेम करैत छी।

अपन बात

प्रेम एकटा विशिष्ट अनुभूति थिक, जे विशेष अवस्थामे होइत अछि। ओ विशेष अवस्था हरदम विशेषे रूपमे हो, ई कोनो जरूरी नहि। सामान्यो अवस्था कखनो-कखनो विशेष भऽ जाइत अछि आ लोक प्रेमक अनुभव करय लगैत अछि। जकर साक्षी देश, काल आ पात्र बनैत अछि। प्रेमक अनुभव जखन लोककेँ होमय लगैत छैक तँ सामान्यों बस्तु खास लागय लगैत छैक। नेना रही तऽ बनचमेली आ बेलीसँ हमरा बहुत प्रेम रहय। ओकर सुगंध मन-प्राणमे समा जाय आ ओकरा तोड़ि-तोड़ि हम जुट्टीमे गूथि ली, केशमे खोंसि ली आ फूल लगेलाक बाद लागय हम इन्द्रक परी भऽ गेल छी। इन्द्रक परीकेँ तऽ हम देखने नहि रही धरि अपन बाकेँ मुँहे हुनक सुन्दरताक वर्णन बहुत सुनने रही खिस्सामे। तेँ हुअ जे धरती आ स्वर्गक सभसँ सुन्दर स्त्रीकेँ लोक परी कहैत अछि आ से परी हम भऽ गेल छी फूल लगाकऽ। तहिना आल रंगसँ हमरा सेहो बहुत प्रेम रहय। ताहि दिनमे आल रंगसँ लोक पैर राँगय आ हमहुँ ओहि आल रंगसँ पैर राँगि ली आ बेर-बेर निहारी ओकरा। लागय आल रंग लगेलाक बाद पैर बहुत खास भऽ गेल अछि।

फेर कनी नम्हर भेलहुँ तऽ साहित्यसँ प्रेम भऽ गेल। कोनो नीक किताब पढ़बाक लेल भेटय तऽ लागय दुनियाँक सभ सुख एक दिस आ ई सुख दोसर दिस। ताहिमेसँ जँ कियो चुनय कहत हमरा तऽ हम एकरा चुनब। कखनो-कखनो कोनो नीक किताब पढ़ैत-पढ़ैत आँखि लागि जाय तऽ दुनियाँक सभसँ सुन्दर सपना आबय। लागय बिना पाँखियेंक हम उड़ि रहल छी सभसँ सुन्दर जगहमे। नीक किताब पढ़ब हमरा एखनो नीक लगैए। जीवनमे बहुत मौसम बदलल जे नहि बदलल ओ थिक साहित्यसँ प्रेम। तहिना नीक कपड़ा हमरा नेनेसँ नीक लगैए। पिता रहथि किसान। शहरसँ कोनो सम्पर्क नहि रहय परिवारक। नीक वस्त्र ताहि समयमे शहरेमे उपलब्ध रहैक। गाममे लोक अधिकांशतः कोटा परसँ वस्त्र आनय। ताहि दिन राशनक संग-संग वस्त्रो भेटैक कोटा पर। तहियोसँ नहि तऽ लोक हाट

परसँ वस्त्र कीनय। बेसीसँ बेसी लग-पासक छोट-छीन बाजार। तेँ नीक वस्त्र हमरा एहेन सामान्य घर-परिवारक नेना लेल उपलब्ध होयब कठिन छल। कहियो-कहियो मैंयाँ तीर्थ करय जाथि तऽ हमरा लेल ओतयसँ नीक फराक आनथि। तकरा पहिरि हम इतराय। एम्हरसँ देखी, ओम्हरसँ देखी, तैयो नहि सम्पूर्ण देह देखाय। अयनाक नाम पर रहय मायक शृंगारदानीमे चारि आँगुरक अयना। जकरा सहारे माय सिनूर करथि।

कहबाक तात्पर्य प्रेम एकटा भाव छी जे प्रभावित करैए एक-दोसराकेँ। ई भाव कखनो वस्तु संग होइए तऽ कखनो व्यक्ति संग। ई भाव जखन प्रवल वेगसँ उमड़ैए तऽ सभ बान्ह तोड़ि फेकैए। इच्छित वस्तु इच्छित लोक धरि लोक हर स्थितिमे पहुँचैत अछि। एकरा प्रेमक संयोग कहि सकैत छी। जखन दू भाव एक समभाव भऽ प्रेम रूपमे पूर्ण भऽ जाइए। एतय देश-काल आ पात्रक विपरीत स्थिति नहि महत्व रखैए। महत्व रखैए प्राप्त करबाक इच्छा। ओकर प्रयास, ओकर लगनशीलता।

तहिना दू भाव जखन कोनो विशेष अवस्थामे एक नहि भऽ पबैए तऽ ओ वियोग कहबैए। प्रेम धरि दुनूक बीच रहैए। संयोग आ वियोग प्रेमक बामा-दहिना हाथ छी। दुनू अपना-अपना जगह पर महत्वपूर्ण। नहि कियो सामान्य, नहि कियो विशेष आ ई जे सृष्टि अछि ने, प्रेमक एहिये दुनूसँ बान्हल अछि।

संयोग हुअ वा वियोग, प्रेम हर अवस्थामे रहैए। बिना प्रेमक जीवनक कोनो कल्पना नहि। संसारक कोनो सम्बन्ध नहि। चाहे मनुख हो वा पशु-पक्षी वा अन्य जीव। एकटा सुग्गा-मैना दोसर सुग्गा-मैना संगे रहय चाहैत अछि। कुकुरो-बिलाड़ि अपना लेल एकटा संगी अनैए, जकरा संग भावक संप्रेषण करैए। ई जे संप्रेषणक लेल संगीक चुनाव छी वैह तऽ प्रेम छी। प्रेम बिना कोनो जीव रहिये नहि सकैए। एकटा कौओ आधा रोटी ताकि-हेरि अनैए तऽ ओकर एक कोन दोसर कौआक मुँहमे दैए। पड़बो-मैना हेरि-हेरि दाना अपन नेनाक मुँहमे दैए।

प्रेमक एक नहि, अनेक रूप अछि सृष्टिमे। कखनो प्रेमी-प्रेमिकाक रूपमे, कखनो माता-पिताक रूपमे, कखनो भाइ-बहिनिक रूपमे, कखनो पति-पत्नीक रूपमे। कखनो बेनामोक नाम रूपमे जतय प्रेम सर्वोपरि भावमे रहैए। कोनो नाम नहि, कोनो पहिचान नहि धरि तैयो हरियर लत्ती सन

उतरल-चतरल रहैए प्रेम जकरा देखिकऽ सेहन्ता लागि जायत।

ई जे प्रेम अछि ने ओ सुपर-ग्लू बनि जोड़ने अछि एककेँ दोसरासँ। जे विपरीतसँ विपरीत परिस्थितिमे एककेँ दोसरसँ अलग नहि होमय दैत अछि। वैज्ञानिक लोकनि शोध कऽ रहल छथि ईश्वरक। मुदा ईश्वरक खोज करबाक हमरा जनतबे कोनो बेगरता नहि। जँ ईश्वरकेँ देखबाक हो, जँ ईश्वरकेँ जनबाक हो, जँ सर्च करबाक हो सुपर पॉवरक, जाहिसँ सृष्टि सुचारू रूपमे चलैए तऽ प्रेमकेँ देखय। प्रेमेक ई संतुलन एहि संसारक जड़िमे अछि। एहि धरतीक सम्पूर्ण चास-बासक एकमात्र पालनहार ई प्रेम अछि। प्रेम-शून्य जीव नहि भऽ सकैए। एकर मुख्य कारण इहो भऽ सकैए जे जीवनक उत्पत्तिक जड़िमे दू जीवक मिलन अछि जे आपसी भावक आदान-प्रदानमे एक-दोसराक निकट अबैए आ जाहिसँ तेसर जीवक उत्पत्ति होइए।

प्रेम समर्पण मँगैए मुदा प्रेम बन्धन नहि छी। प्रेम मुक्त करैए। जतय बन्धन रहैए, ओतय प्रेम भइये नहि सकैए। प्रेम स्वैच्छिक भाव छी, दबाव नहि। दबावमे प्रेम नहि, दबावमे बन्धन होइत अछि। जतय दू प्राणी मिलियोकेँ नहि बात बुझैए, नहि एक-दोसराक भाव। ओ हर घड़ी एही ताकमे रहैए जे कोन विधि एहि बन्धनसँ मुक्त भऽ जाय आ येन-केन-प्रकारेण जखन ओ बन्धन-मुक्त होइत अछि तऽ बन्धन-मुक्त भेल पशु सन ओ निछोहे भगैए आगू, बिना पाछू देखनहि। तखन ओ अबय बला समयक परिणामक चिंता नहि करैए। मात्र बेड़ी-मुक्त होयब ओकर लक्ष्य रहैए।

प्रेम पर हमर अनुभव सीमित अछि। हम सामान्य घर-परिवारसँ अबैत छी। सामान्य परिस्थितिमे हमर लालन-पालन भेल। हम एहनो विकट स्थिति देखने छी जतय दू प्राणी एक-दोसराक भाव बूझब तऽ दूरक बात, बातो बुझय नहि चाहैत छल तथापि जीबि लैत छल सम्पूर्ण जीवन एक-दोसराक संग, एके घरमे रहैत, एके अन्न-तीमन खाइत, एके रंगक समस्याक समाधान तकैत। हम बहुत रास एहन विकट परिस्थिति देखने छी जतय प्रेम नहि घृणा भऽ सकैए एक-दोसराक लेल। मुदा प्रेम-शून्य हमर हृदय नहि अछि। हम अनुभव करैत छी सम्पूर्ण सृष्टिक लेल प्रेम। क्रोधमे दोसराक गलत व्यवहारसँ जँ प्रतिकारक क्षणिक आवेग अबितहु अछि तऽ पुनः अपनाकेँ सम्हारि लैत छी। धीरे-धीरे स्थिति सामान्य भऽ जाइत अछि

आ हम पुनः अनुभव करय लगैत छी एक-दोसराक लेल प्रेम।

एहि संग्रहक अस्सी प्रतिशत रचना यथार्थक भावभूमि पर रचल गेल अछि। जाहिमे कल्पनाक रत्ती भरि गुंजाइश नहि। नेनासँ आइ धरि जे आँखि देखलक, जे कान सुनलक, जे हृदय अनुभव कयलक, तकरे हम लेखनीबद्ध कऽ देल। हमरा लागल प्रेम पहाड़ परहक कोनो विशेष फल नहि, अपने बाड़ी महक आम आ लताम छी जकर स्वाद अपूर्व होइत अछि। एहेन अपूर्व, जकरा चखलाक बाद जकरासँ दूर जयबाक कल्पनोमे कल्पना नहि कऽ सकैत छी हम, नहि कऽ सकैत छी अहाँ...।

—कामिनी

कविता-क्रम

11 : प्रेम-1
13 : प्रेम-2
16 : प्रेम-3
18 : प्रेम-4
21 : प्रेम-5
24 : प्रेम-6
26 : प्रेम-7
29 : प्रेम-8
31 : प्रेम-9
33 : प्रेम-10
35 : प्रेम-11
37 : प्रेम-12
38 : प्रेम-13
39 : प्रेम-14
41 : प्रेम-15
43 : प्रेम-16
45 : प्रेम-17
47 : प्रेम-18
50 : प्रेम-19
52 : प्रेम-20
55 : प्रेम-21
58 : प्रेम-22
64 : प्रेम-23
67 : प्रेम-24
72 : प्रेम-25
75 : प्रेम-26
80 : प्रेम-27

86 : प्रेम-28
91 : प्रेम-29
94 : प्रेम-30
96 : प्रेम-31
98 : प्रेम-32
104 : प्रेम-33
107 : प्रेम-34
111 : प्रेम-35
116 : प्रेम-36
118 : प्रेम-37
119 : प्रेम-38
122 : प्रेम-39
125 : प्रेम-40
127 : प्रेम-41

प्रेम-1

कखनो भरल गिलास
अमृत होइत अछि प्रेम
कखनो भरल गिलास
विष होइत अछि प्रेम
कखनो आधा गिलास अमृत
तऽ आधा गिलास विष
होइत अछि प्रेम
कखनो सम्पूर्णों गिलास अमृतमे
एक बून्द विष
होइत अछि प्रेम
कखनो सम्पूर्णों गिलास विषमे
एक बून्द अमृत
होइत अछि प्रेम
प्रेम धरि उपस्थित रहैत अछि
सभ जगह, सभ रूपमे

प्रेमविहीन जीवन
नहि मनुखक होइत अछि
नहि चर-अचर कोनो जीवक
प्रेम ओ तत्व छी
जे जोड़ने अछि लोककेँ लोकसँ
जीवकेँ जीवसँ
जँ सृष्टिक निर्माण
विधाता प्रेमसँ पहिने
करबाक प्रयास
कयने रहितथि

तऽ सए मे सए मानू
असफल भेल रहितथि अवश्ये

ओ तऽ सुकुर भेल जे
पहिने प्रेम बनल
तखन जीव
नहि तऽ एम्हर
निर्माण करितथि विधाता
ओम्हर ससरैत जइतय
हाथ महक बालु जकाँ
सम्पूर्णो सृष्टि
ककरा-ककरा समेटितथि
ककरा-ककरा पकड़ेतथि
सभ पुरबा-पछबा बसातमे
उड़ियाइत रहितय
एम्हरसँ ओम्हर

ई तऽ धनि कही प्रेमकेँ
जे मोह उत्पन्न करैत अछि
एक-दोसरासँ
सम्बन्ध जोड़ैत अछि
बसबैत अछि परिवार
सजबैत अछि समाज
बनेने रहैए सृष्टिक निरंतरता
एहि सभक बीच
प्रेम कम रहय या बेसी
ई महत्व नहि रखैए
महत्व रखैए ई
जे प्रेम हर जगह
हर रूपमे उपस्थित रहैए। •

प्रेम-2

योग आ भोग
दुनूक लेल
प्रेम आवश्यक
जँ प्रेम
नहि हो मनमे
तऽ भोगोसँ वितृष्ण
जँ प्रेम
नहि हो हृदयमे
तऽ योगो संभव नहि

ई जे प्रेम अछि ने
ओ जोड़ने अछि
लोककेँ
योग आ भोगसँ

मानलहुँ बुद्धकेँ
यशोधरासँ
प्रेम नहि छलनि
से जँ रहितनि
तऽ अधरतियामे चुपेचाप
निकलितथि यशोधराकेँ
ओतेक विकट परिस्थितिमे
असगरे छोड़ि
जखन एकटा गृहिणीकेँ
एकटा गृहस्थ पतिक
सभसँ बेसी बेगरता

होइत अछि

अरे मनलहुँ
नौकर-चाकर
धन-धान्यसँ
भरल-पूरल छल परिवार
धरि सुखकेँ सम्हारबाक लेल
आ दुःखकेँ बँटबाक लेल तऽ
एकटा अपन लोकक होयब
आवश्यक अछि जीवनमे
आ गृहस्थाश्रममे
पतिसँ अपन
आ पत्नीसँ प्रिय
आन के भऽ सकैत अछि

धरि तेँ कहब जे
प्रेम शून्य छल
बुद्धक हृदय
से नहि छल
ओ यशोधरासँ नहि
वैराग्यसँ प्रेम केलनि
मुदा प्रेम केलनि अवश्य

जँ प्रेम नहि रहितनि
वैराग्यसँ
तऽ बारह साल धरि
जेठक दुपहरिया
भादवक बरिसकाल
आ पूसक जड़कालामे
की जड़ भेल

बैसल रहितथि
राजमहलक राजकुमार
अपन राजपाटक परित्याग कऽ
एकांत जंगलमे

प्रेम योग आ भोग
दुनूक क्षमता
प्रदान करैत अछि
जँ प्रेम नहि हो
जीवनमे
तऽ जीवन
बंजर-वीरान भऽ जायत
जतय नहि
योग पलत
आ ने भोग।

•

प्रेम-3

की प्रेम करबाक लेल
दू गोटेकेँ होयब
आवश्यक अछि
की असगर लोक
स्वयंसँ प्रेम
नहि कऽ सकैत अछि

मानलहुँ भावनाक
आदान-प्रदान लेल
दू गोटेकेँ होयब
आवश्यक अछि
धरि जँ भावनाकेँ
बुझयबला
दोसर नहि हो
जीवनमे
तऽ स्वयंसँ
स्वयंकेँ प्रेम
आवश्यक अछि

कारण जँ स्वयंसँ
स्वयं अहाँ प्रेम
नहि करब
तऽ दोसरकेँ
प्रेम देब
आ दोसरक प्रेमकेँ चिन्हब
कठिने नहि

अति दुष्करो अछि

आ ई आवश्यको तऽ नहि
जे जीवनमे
सभकेँ सभसँ
प्रेम भेटबे करैत हो
जखन की
प्रेम अछि
जीवन लेल जरूरी।

•

प्रेम-4

पिता! नहि देलनि
मायकेँ कहियो गुलाब
हुनका बाड़ीमे तऽ
कनैल आ अड़हुल
लागल छल
जे भोरे-भोर
भकरार भऽ फुलाइत छल
जाहि फूलसँ
माय सभ दिन
पुजैत छलीह
कुलदेवी कालीकेँ
ग्रामदेवी विषहराकेँ
आ स्थान देवता
बजरंगवलीकेँ

पिता! मायसँ पुछि-पुछि
कोनो काजो नहि तेहन
करैत छलाह
जाहिमे मायक
सहमति-असहमति
हो आवश्यक
पिता मायकेँ पुछि
कोनो तेहनो जगह
नहि जाइत छलाह
जे मायक लेल
हो प्रिये

पिता! मायक पसंद-नापसंदक
कोनो तेहनो ख्याल
नहि रखैत छलाह
जाहिसँ
मायक भावना
हो संरक्षित-संवर्धित

पिता! मायक लेल
नहि कोनो
हाट-बाजार गेलाह
आ नहि कीनलाह
साज-शृंगारक
कोनो सामान
साड़ी-कपड़ाक नाम पर
माय लग रहैत छल
वैह सासुर नैहरसँ देलहा
जोलहा पढ़िया
या एकरंगा साड़ी
जकरे पहीरि माय
होली आ दिवाली
दुनू मनबैत छल

घरमे रुपैयो-पैसाक
कोनो तेहेन आमदनी
नहि छल
जाहिसँ माय
अपनहुँ कोनो ब्योंत कऽ
पुरबितथि अपन
कोनो सख-मनोरथ

ओ तऽ जानि-बुझिकेँ
पहीरैत छल मोटका चूड़ी
जे गोबर ठोकैत काल
धान कुटैत काल
कुटिया-पिसिया करैत काल
फुटय नहि सहजतासँ

धरि तैयो कहब जे
मायक मोनमे
पिताक लेल प्रेम
नहि छल
या पिताक मोनमे
मायक लेल
कोनो कोमल तंतु
नहि छल
तऽ झूठ होयत

किछु तऽ छल
दुनूक बीच
जे पिताकेँ
नहि रहलाक बादो
बाँचल अछि
एखन धरि
मायक मोनमे
आ बाँचल छल
पिताक मोनमे
जे मृत्यु-सज्या पर
पड़ल रहलाक बादो
तकैत छल
माइएक बाट। •

प्रेम-5

जँ आइ-काल्हि जकाँ
लड़की देखिकेँ
बियाह करबाक
पहिले ई चलनि रहितै
सत मानू
हमर सासुक बियाह
तऽ हमरा ससुर संग
किन्नहुँ नहि होइतनि
देखबा-सुनबामे
कोनो तेहेन
नहि छलीह
हमर सासु
जे पहिल आकर्षण
बनैत अछि
कोनो स्त्री लेल
कोनो पुरुषक मोनमे

एकदम सामान्य
छलीह हमर सासु
नहि रंग साफ
आ नहि मुँहक गढ़नि
कोनो तेहेन
जे एकटा नवकनियाँमे
तकैत अछि लोक
हँ, आचार-विचारसँ
छलीह एकदम पाक-साफ

सैह कारण रहल होयत
जे सुन्दर नहि रहितहुँ
प्रिय छलीह अपन पतिक
जे अपना पत्नीक
इच्छाक विरुद्ध
एकटा खढ़ नहि घुसकेलनि
अपना जीवनमे

जामे सासु हमर
भानस करैत रहैत छलीह
ससुर हमर
दुआरि पर बैसल
एकटक तकैत रहैत छलाह
जामे ससुर हमर
खाइत रहैत छलाह
सासु हमर
बीयनि डौलबैत
बैसल रहैत छलीह
माथसँ घाम चुबनि
ससुर जीकेँ
आ आँचरसँ घाम
पोछथि सासु हमर

जे सासु हमर
बेटियोक द्विरागमन दिन
ही फोड़िकऽ
नहि कनलीह
से सासु हमर
पतिक मरलापर

ततेक कनली
ततेक कनली
की पाथरो पसीझि जइतय
ककरो धैर्यता नहि रहितय

जँ सम्हारनिहार नहि रहितय हुनका
तऽ पतिक वियोग्नाग्निमे
कहिया नहि
जरिकऽ राख
भऽ गेल रहिती
जकर नामो-चर्चा
नहि रहितय
लोकक जुबान पर!

•

प्रेम-6

एगो बात कहैत छी
एकरा अन्यथा
नहि लेब अहाँ
ई बात मोनमे तऽ
छल बहुत दिनसँ
धरि कहैक साहस
जुटेलहुँ आइ
कतेको वर्ष
बीतलाक बाद

सभ दिन
इहे सोचैत रहलहुँ
जँ एहि बातक पता
अहाँकेँ लागत
की अहाँ हमरा
नीक नहि लगैत छी
तऽ केहन लागत
शायद एकदमे
नीक नहि लागय
या भीतरे-भीतर
एहि बातक दुख
अहाँकेँ सालैत रहय
की अहाँ हमरा
नीक कियैक नहि लगैत छी

धरि की कही हम

नीको लगबाक लेल
किछु ने किछु नीक
लोकमे होयब आवश्यक
आ से नीक
लाख ताक-हेर
केलाक उपरान्तो
आइ धरि हमरा
नहि भेटल अहाँमे
अहाँ हृदयमे
जे भेटल
ओ मरुस्थलक
अगबे बालु
जाहि पर
नहि गहुँम उपजि सकैत अछि
आ नहि गुलाब!

•

प्रेम-7

द्वापर युगसँ
आइ धरि
राधा कऽ रहल छथि प्रतीक्षा
अपन कृष्णक
वैशाखक रौदमे जरैत
माथक घामकेँ
आँचरसँ पोछैत
मथुरा दिस
एकटक तकैत
श्याम औताह
कहि जे गेल छलाह
अवश्ये औताह
श्याम नहि अबैत छथि

साओनक वर्षामे भीजैत
माथसँ पैर धरि
पानि-पानि होइत
भरल यमुनाक
उलाहना सुनैत
राधा ठाढ़ छथि
मथुरा दिस तकैत
कृष्ण औताह
अवश्ये औताह
कहि जे गेल छलाह
कृष्ण नहि अबैत छथि

अगहन-पूसक जाड़मे
हाड़केँ गलबैत
पुरबा-पछबा बसातक
जोरसँ
रोइयाँ-रोइयाँ सिहरबैत
राधा ठाढ़ छथि
मथुरा दिस तकैत
माधव औताह
अवश्ये औताह
कहि जे गेल छलाह
माधव नहि अबैत छथि

फागुन-चैतक मधुमासमे
जतय फूलसँ लदल अछि शाखा
भ्रमराक गीतसँ
गुँजैत अछि उपवन
परिवर्तनक आश लेने
नव जीवनक नवोल्लास लेने
राधा ठाढ़ छथि
मथुरा दिस तकैत
कन्हैया औताह
अवश्ये औताह
कहि जे गेल छलाह
कन्हैया नहि अबैत छथि

हुनका फुरसति कहाँ छनि
राजनीतिक दाँव-पेंचसँ
बाहर निकलताह
पुरान प्रेमकेँ मोन पाड़ताह
हुनका लेल तऽ

सोलह हजार पटरानी
सोलहो श्रृंगार केने
हर घड़ी प्रतिक्षारत रहैत छनि
अपन-अपन कक्षमे

राधा प्रतीक्षा करैत
ठाढ़ छथि
ठाढ़े रहतीह
कृष्णक जीवनसँ दूर
कृष्णक वैभवसँ दूर
जामे धरि सृष्टि रहत
जामे धरि कृष्णक नाम रहत।

•

प्रेम-8

मैंयाँकेँ प्रेम छलनि
एकटा सुग्गासँ
जामे सुग्गा
नहि कहय– ''राम नाम''
तामे मैंयाँक भोर
हेबे नहि करनि

बाबाकेँ प्रेम छलनि
एकटा कुकुरसँ
जामे बाबा खाइत रहैत छलाह
कुकुर बैसल रहैत छल ओलतीमे
आ जामे बाबा
ओकरा अपना थारीसँ
अपन भोजनक किछु अंश
नहि खुअबथि
तामे हुनकर पेट
भरबे नहि करनि

पिताकेँ प्रेम छलनि
अपन हर-बड़द
अपन खेती-बारीसँ
पह फटैसँ पहिने
जामे ओ बड़दकेँ
सानी नहि लगाबथि
दिन भरि खेत-पथार
नहि सम्हारथि

तामे हुनका नींदे नहि होइनि

मायकेँ प्रेम छलै
अपन चुल्हा-चेकी
अपन भनसाघरसँ
जामे सभ दिन
सभक इच्छानुरूप
भानस नहि करय
सभकेँ परोसि-परोसि
नहि खुआबय
तामे ओकरा कंठसँ निच्चाँ
एक कओर भात
की एक घोंट पानि
जेबे नहि करैक

हमरा प्रेम अछि
अपन कॉपी-किताब
अपन पढ़ाइ-लिखाइसँ
जामे किछु पढ़ब नहि
जामे किछु लिखब नहि
तामे चैने नहि
भेटैत अछि कहुना

सभकेँ अपन-अपन प्रेम छैक
अपन-अपन अनुभूति छैक
एहिमे
नहि ककरो प्रेम
आम अछि
नहि ककरो प्रेम
खास अछि। ·

प्रेम-9

प्राप्ते करबाक नाम
नहि छी प्रेम
बोहेबाक नाम
सेहो छी प्रेम

से जँ नहि रहितय
तऽ कृष्णक प्रेममे
पड़ल राधा
कृष्णसँ दूर रहितहुँ
कृष्णेकेँ नहि सुमरितथि
अपना आपकेँ
नहि बिसरितथि

से जँ नहि रहितय तऽ
जे राम गर्भावस्थामे
सीताक परित्याग कऽ देलनि
ओही रामकेँ
अपन आदर्श मानि
सीता अपन नेनाकेँ
नहि सुशिक्षित करितथि
हुनके सुमरि-सुमरि
नहि अपन जीवन बितबितथि

से जँ नहि रहितय तऽ
जे बुद्ध नवोढ़ा यशोधराकेँ
सुप्तावस्थामे असगरे छोड़ि

संन्यास ग्रहण कऽ लेलनि
ताही बुद्धकेँ यशोधरा
नहि अपन संतान सौंपितथि
नहि अपने बुद्धक पाछू-पाछू
संन्यासिन बनि
गृहस्थ धर्मक
परित्याग करितथि

ई तऽ भेल
इतिहासक बात
वर्तमानोमे बहुत एहेन देखलहुँ
जे प्रेमक शुद्ध सात्विक रूप
प्रस्तुत करैत अछि जीवनमे

से जँ नहि रहितय तऽ
चारिटा बच्चाकेँ
असगरे निमेरा करैत
छोटकी काकी
दिल्ली-बंबई, कलकत्ता-पंजाब
जतय कतहु भ्रमण करैत
युवावस्था बितबैत
दादाकेँ
बुढ़ारीमे
सेवा-भावसँ
नहि सत्कार करितथि
अपन आँचरसँ
नहि मुँह पोछितथि।

•

प्रेम-10

मन कहैत अछि
अहाँ एतहि कतहु छी
अलग-बगलमे
हमरा साँसमे
आबि रहल अछि
अहाँक साँसक सुगंध

अहाँक साँसक सुगंधसँ
ई परिचित अछि तहिना
जहिना भ्रमरा परिचित होइत अछि
फूलक परागसँ
मन-प्राणमे समाइत
ओकर सुगंधसँ

मुदा दृष्टि-पटलसँ
छी ओझल
या नहि रहि गेल अछि
हमरा दृष्टिमे
ओ साहस
जे देखि सकत
निराकारमे
साकार भेल
अहाँकेँ

अहाँ ब्रह्म नहि छी
नहि छी कोनो

विशेष उपनामधारी जीव
जकरा समक्ष
ठाढ़ होइक साहस
नहि जुटा सकब हम

हमरा लेखें तऽ
अहाँ अपना घरक
ओ पुरान कैलेन्डर छी
जकर एक-एक तारिख
जानल-पहिचानल अछि
जकर एक-एक दिन
प्रेमक पागमे पागल अछि

अहाँ ब्रह्माण्डमे
कतहु नुका रही
हमरा हृदयसँ ओझल
नहि भऽ पायब कहियो
अहाँ कतहु दूर चलि जाउ
हमरासँ दूर
नहि जा पायब कहियो

हम-अहाँ
बड़ आ पीपरक
जोट्टा गाछ जकाँ
तेना ने समायल छी
एक-दोसरामे जे
दू जीव, एक जान भऽ गेल छी
दू देह, एक प्राण भऽ गेल छी।

•

प्रेम-11

रोटी बेलैत रहैत छी
तखनो सुना पड़ैत अछि कू-कू-कू
तरकारी कटैत रहैत छी
तखनो सुना पड़ैत अछि कू-कू-कू
स्नान-ध्यान करैत रहैत छी
तखनो सुना पड़ैत अछि कू-कू-कू
पता नहि ई कोइली
ककरासँ प्रेम करैत अछि
हरदम करैत रहैत अछि कू-कू-कू

एखन माघ बितबो नहि कयल
फागून दूरे अछि
गाछ सभ पतझारे लऽ रहल अछि
फूल फुलायब बाँकिये अछि
तखन नहि जानि
कोन पूर्वाभाससँ
कोइली कऽ रहल अछि कू-कू-कू

नहि एखन
आम मोजरल
नहि बड़हर फुलायल
नहि कटहर मोछियायल
महुआ पर फड़
एखन बाँकिये अछि
नहि जानी तैयो
कोन मनभावन सुगंधसँ

कोइली करैत अछि कू-कू-कू

जँ मनुख रहितय कोइली
तऽ एतेक दिनमे
कएक बेर मिलन
तऽ कएक बेर
बिछुड़नो भेल रहितै
ओ बिसरि जइतय
प्रेमक वाणी कू-कू-कू
सुकूर छैक जे पक्षी अछि
मौसम-चक्र कतबो बदलै छैक
ओ नहि बिसरैत अछि कू-कू-कू...।

•

प्रेम-12

प्रेम! शब्द मात्र नहि
जे बेर-बेर दोहरेलासँ
बेर-बेर रटलासँ
कंठस्थ भऽ जायत

प्रेम! ओ विशिष्ट
अनुभूति छी
जे हृदयसँ
हृदय धरिक यात्रा
तय करैत अछि

चाहे परिस्थिति
कतबो प्रतिकूल
कियैक ने हो
आन्ही-बिहाड़ि
पानि-पाथर
कियैक ने आयल हो
नाको-नाक भेल
कियैक ने लागल हो जाम
धरि तैयो
ओ सकुशल
पहुँचि जाइत अछि
हृदयसँ हृदय धरि।

•

प्रेम-13

हम चाहैत छी
अहाँसँ घृणा करी
हम चाहैत छी
अहाँसँ दूर चलि जाइ
हम चाहैत छी
नहि देखी अहाँक शकल
जीवनमे फेर कहियो

धरि नहि हम अहाँसँ
घृणा कऽ पबैत छी
नहि अहाँसँ
दूर जा पबैत छी
नहि रोकि पबैत छी
एहि आँखिकेँ
अहाँक शकल देखबासँ

हम सभ बेर जीतैत-जीतैत
हारि जाइत छी प्रेमक हाथे
जे सए मेसँ
नब्बे प्रतिशत
बंजर-वीरान
भेलाक बादो
दसे प्रतिशतमे
हरिया जाइत अछि सभ बेर
बिन बरसातो। •

प्रेम-14

जेठक एहि आतप बेलामे
एकटा अहाँकेँ नहि रहने
घरक वातावरण आरो गर्म लगैए
जकरा कृत्रिम हवाक शीतलता
सेहो नहि शीतल कऽ पाबि रहल अछि

जखन कि एहि हृदयकेँ
नहि छैक अभ्यास
अहाँक प्रेम पारिजातक
कोनो तरहक वृष्टिक
अहाँ तऽ तीसी जकाँ
चन-चन-चन करिते रहैत छलहुँ अनेरे
जे बेसम्हार भऽ
किछु एहि पार खसैत छल
तऽ किछु ओहि पार
जकरा समटैत, सरियाकऽ रखैत
बीति गेल हमर आधा जीवन

कमे एहेन समय आयल होयत
हमरा-अहाँक जीवनमे
जतय वैचारिक सहमति
बनल हुअ
हमरा-अहाँक बीच
बाघ आ सिंह जकाँ
दुनू अपना-अपना क्षेत्रक

राजा-रानी रहलहुँ
जाहिमे एक-दोसराक प्रवेश
निषेध रखलहुँ
हर घड़ी
एके घरमे रहैत
एक अन्न-तीमन खाइत
एके रंगक पानि पीबैत
दू रंगक विचार
दू रंगक मोन रहल
हमरा-अहाँक सदैव

एक प्राण दू देहक सपना
तऽ नहि भेल साकार एखन तक
धरि आगुओ हम
एहेन तरहक कल्पना
नहि करैत छी
भविष्यक लेल
जतय अपन पृथक अस्तित्वकेँ
नहि बचा पाबी अहाँ
नहि बचा पाबी हम

धरि तैयो कहब
जे हमरा-अहाँक बीच
किछु नहि अछि
तऽ इहो सत नहि हैत
किछु तऽ अछि अवश्य
हमरा-अहाँक बीच
जे जोड़ने अछि
एक-दोसराकेँ
एक-दोसरासँ। •

प्रेम-15

धीरे-धीरे प्रेमो
रीत जाइये जीवनमे
काल्हि तक जाहि लेल
तड़पैत रहय आत्मा
आफन तोड़ैत रहय मोन
ओ समयक संग-संग
धीरे-धीरे
एना बहि जाइए
जे जगह भऽ जाइए
एकदम खाली
भरल-पूरल ब्राह्मण्डमे
शून्य सन
जकरा हेबा नहि हेबासँ
कोनो अंतर
नहि पड़ैत छैक लोककेँ

जे प्रेम काल्हि तक
जीवनक आधार
बनल रहय
सपनाक संसार
बनल रहय
से प्रेम अचानक
एक दिन एना
आलोपित भऽ जाइये जीवनसँ
की मनुख सीखि लैए

प्रेमक बिना
सेहो जीनाइ
प्रेम विहीन सपना बुननाइ

नित्य किछु नहि अछि जीवनमे
आ नित्यकेँ निरन्तरता लेल
जे समर्पणक भाव
चाही मनुखमे
से धीरे-धीरे
समयक संग
क्षरित होइत जाइत अछि
आ अपन आसन
जमबय लगैत अछि
परस्पर हितक संबंध
जे बदलैत समयक संग
जेठक आतप दुपहरियामे
सुखाइ लगैत छैक
जकर सरसताक स्रोत
आ स्रोतक सुखितहि
समाप्त हुअ लगैत छैक प्रेम

एहि तरहें
साओनमे
जाहि प्रेमक
जन्म भेल रहय
से वैशाख अबैत-अबैत
एकदम भऽ जाइए
सुखाकऽ टाँट
बूंद-बूंद कऽ खाली।

•

प्रेम-16

दुनियाँक कोनो एहेन हाट
नहि बनल
जतय प्रेम बिकाइत हो
दुनियाँमे कोनो एहेन बाजार
नहि अछि
जतयसँ प्रेम
कीनल जा सकय
प्रेमक उपार्जन
मात्र प्रेमेसँ
कयल जा सकैए
एहि लेल मनमे
भाव होयब
परम आवश्यक

जँ भाव नहि हो जीवनमे
तऽ सभटा अभावे बुझना जायत
भरल नदीयो
सुखायले लागत
हरियरो धरती
बंजरे लागत
लागत एकटा खालीपन
जे समेटि लेने अछि
अहाँक सम्पूर्ण अस्तित्वकेँ
अपनामे

अहाँ दुनियाँक भीड़मे

एसगरे पायब अपनाकेँ
जँ प्रेम नहि हो जीवनमे
एकटा प्रेमे एहेन
प्राकृतिक तत्व अछि
जे जोड़ने अछि
लोककेँ
लोकसँ
जीवकेँ
जीवनसँ।

•

प्रेम-17

कोनो नाम नहि अछि
हमरा-अहाँक सम्बन्धक
कोनो पहिचान नहि अछि
हमरा-अहाँक सम्बन्धक
मुदा सम्बन्ध अछि
हमरा-अहाँक बीच
विशुद्ध प्रेमक
जाहिमे
कोनो मिलावट नहि
कोनो कृत्रिमता नहि
एकदम प्राकृतिक
रजनीगन्धाक फूल सन
दूर-दूर धरि सुवासित
लोक-वेद
देव-पितर
जाहि पर
सभ मोहित

जकरा कहियो
नहि नामक बेगरता पड़लै
नहि कोनो सामाजिक पहिचानक
जे नहि पंचदेवताकेँ
साक्षी रखलक
नहि पंचगब्य छुबि
शपथ खयलक
धरि तैयो

टिकल अछि
सांसारिक सभ सम्बन्धसँ बेसी
गारंटी लेने
हमरा-अहाँक बीच

ई जे प्रेमक
सम्बन्ध होइत अछि ने
ओ सभ सम्बन्धक
उत्पत्तिक स्रोत
जँ प्रेम नहि अछि सम्बन्धमे
तऽ सम्बन्ध
नहि बाँचत
जेठक आतप दुपहरियामे
सुखाइत करमीक लत्ती सन
सुखा जायत
धीरे-धीरे अपनहि।

•

प्रेम-18

बेर-बेर बाजि रहल अछि
फोनक घंटी
एहि नम्बरसँ
ओहि नम्बर पर
हम कान मटकेने पड़ल छी
जेना किछु सुनितहि नहि छी
सत कही तऽ
हम सभटा सुनैत छी
नहि सुनैक
बहाना करैत छी

अहाँ फोन करू
खूब करू फोन
हम नहि सुनैत छी
फोनक घंटी
हम नहि सुनब
फोनक घंटी
नहि सुनबाक लेल
हम वचनबद्ध भऽ गेल छी
एक सत
दोसर सत
तेसर सत जे नहि करय
से नरकमे खसय
हँ गरुड़ पुराणबला
रौरव नरकमे
अवर्णनीय, अकल्पनीय, असहनीय

आखिर कियै सुनी हम
अहाँक बात
कियै उठबी हम
अहाँक फोन
जाहि दिनमे
बेगरता रहय हमरा
अहाँक संवेदना
अहाँक सद्भावनाक
अहाँ छही माछ जकाँ
छिहुलि खसी
एम्हरसँ ओम्हर
आ हमरा हाथ नहि आबी
हमरा पास नहि आबी

हुअ अहाँकेँ
ई मूढ़मति किछु नहि बुझैए
एहिना सभदिना
एकरा टरकबैत रहबै
टघरबैत रहबै
आ ई प्रतिक्रियाविहीन भेल
चुप्प रहत, बान्हल रहत
हमर खुट्टासँ
कहियो कखनो
प्रेमक हरियरी देखेबै
आ ई सभटा बिसरि जायत

मुदा नहि
एहि बेर हम किछु नहि बिसरब
अहाँक उपेक्षा

अहाँक दुत्कार
अहाँक हृदयहीनता
हम सप्पत खेने छी
हम नहि मानब
एकदम्मे नहि मानब
चाहे सूर्य पश्चिमसँ
कियैक नहि उगथि
या दुनू पक्ष
अमावस्ये कियैक नहि रहय
मुदा कि सरिपहुँ
हम अपना वचनसँ नहि डिगब?
की हैत, की करब, पता नहि
जखन नहि बजैए ई फोन
नहि अबैए अहाँक कॉल
मोन अनायासे चिंतातुर भऽ उठैए
अहाँ ठीक हैब ने?
रातिमे सुतैत छी
तऽ किदन-कहाँदन
सपना आबय लगैए

फेर होइए
हम बात करी
वा नहि करी
ई फोन अबैत रहय
अहाँ फोन करैत रही
जहिना हमरा
रूसबाक अधिकार अछि
तहिना अहाँमे
मनेबाक प्रतिबद्धता
बाँचल रहय। •

प्रेम-19

'कुंज भवनसँ निकसल रे
रोकल गिरिधारी
छोड़ू कन्हैया मोर आँचर रे
फाटत नव साड़ी'
जतेक प्रेम राधा कृष्णसँ
आ कृष्ण राधासँ
नहि कयने हेतीह-हेताह
ओतेक प्रेम
विद्यापति स्वयं
दुनूक बीच उपस्थित भऽ
दर्शने छथि

राधा चाहियो नहि रहल छथि
कृष्ण हुनक आँचर छोड़थि
आ दर्शाइयो रहल छथि
'हम तऽ जाय चाहैत छी
अहींक हठक कारणे
रूकल छी माधव'
ई जे आपसी प्रेम अछि
एक-दोसराक लेल
राधा आ कृष्णक बीच
ओ अद्‌भुत अछि
से जँ नहि रहितय
तऽ आँचर छोड़ा
आगू बढ़ब
राधाक लेल

एक प्रयासक बात छल

मुदा नहि कृष्ण
छोड़य चाहैत छथि
राधाक आँचर
आ नहि राधा
छोड़बय चाहैत छथि
कृष्णक हाथसँ
अपन आँचर
दुनू चाहैत छथि
समय ठहरि जाय ओतहि
राधा आ कृष्णक
संग-संग
कुंजभवनक गलियारीमे।

•

प्रेम-20

कहियो एहेन समय रहय
जहिया मोन हुअ
हम अहाँसँ
आ अहाँ हमरासँ
दूर भऽ जाइ
एतेक दूर
जे अहाँकेँ
नहि हम नजरि आबी
आ नहि हमरा अहाँ

एक-दोसराक लेल
मनमे एतेक उपेक्षा
एतेक कुभावना
भरि गेल रहय
जे एक-दोसराक
परछाहियो देखब
नहि सोहाय
एक-दोसराकेँ

दिन भरि
वैह विष-वाण
जाहिसँ घाहिल
होइत रहय
एक-दोसराक हृदय
प्रेम ककरा कहैत छैक
जेना बिसरिये गेल रही

हम-अहाँ
परिवारक पैघ बेगरताक
जाँत तर पिसाइत
गहुँम सन
विवश रही
हम-अहाँ

एहि तरहेँ
बीति गेल
जीवनक अधिकांश हिस्सा
प्रेम ककरा कहैत छैक
नहि बुझलियैक
एक-दोसरक लेल
जीनाइ-मरनाइ
ककरा कहैत छैक
नहि बुझलियैक
बुझलियैक तऽ एतबे
आँखिसँ
गंगा-यमुनाक धारा
प्रवाहित होइत रहल
आ हम ओहिमे
भसियाइत रहलहुँ

से प्रेमविहीन जीवन
चलैत-चलैत आइ
एहि मोड़ पर
आबिकऽ
रूकल अछि
जतय ई हृदय
अनुभव कऽ रहल अछि

अहाँक प्रेमक
जे जनिते नहि छल
प्रेम ककरा कहैत छैक
से तृप्त भेल अछि
अहाँक प्रेमसँ
नहि सोना
नहि चानीसँ
नहि हीरा
नहि मोतीसँ

सुखसँ बेसी
दुःखमे जे संग दैत छैक
'आहा' कहैत छैक
मोन ओकरे लेल
समर्पित होइत छैक
ओकरे अपना कहैत छैक
आ ई मोन
एहि बेर
समर्पित अछि
अहाँक समर्पण पर
आ ई तहिये भेल चमत्कार
जहिया हमरा आँखिमे
नोर देखि
अहुँक आँखि
नोरा गेल
हमरा दुःख-दर्दसँ
अहुँक देह सिहरि गेल।

•

प्रेम-21

हरियर-हरियर रामझुंगनी
परोड़, कटहर, करैला
हाट-बाजारसँ
जखन चुनि-चुनि अनैत छथि
आ अपन गृहस्वामिनीक
हाथमे दैत
देखैत छथि
हुनक प्रसन्न
मुख-मुद्रा
तऽ ओ होइत अछि
एकटा सद्‌गृहस्थक प्रेम

महिना लगतहि
बना लैत छथि
घरेलू सामानक लिस्ट
आ पहुँचा जाइत अछि
जखन दोकानदार
घरमे सामान
तऽ लिस्टसँ
सामान मिलबैत
जखन देखैत छथि
अपन अर्धांग्नीक मुँह
निश्चिन्तक भाव
तऽ ओ होइत अछि
एकटा सद्‌गृहस्थक प्रेम

गैसक नम्बर लगबैत
बिजलीक बिल भरैत
फोन-टी.वी.
समय पर
रिचार्ज करबैत
जखन कहियो
लऽ जाइत छथि
अपन श्रीमतीकेँ
होटलमे खुएबाक लेल
या हाटे-बाजारसँ
आनिकऽ दैत छथिन
नास्ता-पानिक पतौरा
आ खाइत देखैत छथि
अपना आँखिक सोझाँमे हुनका
स्वादि-स्वादि
तऽ ओ होइत अछि
एकटा सद्‌गृहस्थक प्रेम

स्कूल-कॉलेजक
फीस भरैत
हारी-बिमारीक
लेखा-जोखा रखैत
अपने चिंतामे
राति भरि जगैत
जखन देखैत छथि
अपना नेनाक मायकेँ
चैनसँ सुतैत
तऽ ओ होइत अछि
एकटा सद्‌गृहस्थक प्रेम

होली-दिवालीमे
हाट-बाजार करैत
कीनैत-बेसाहैत
अपना बेरमे
जखन हाथ
भऽ जाइत छनि खाली
तऽ पुरने कपड़ाकेँ
एखन तऽ नवे छैक कहैत
हँसैत घुरि अबैत छथि घर
तऽ ओ होइत अछि
एकटा सद्‌गृहस्थक प्रेम

बाढ़ि अबौक
या अकाल पड़ौक
भूकम्प होउक
वा कोरोनाक काल अबौक
मुख्य द्वारक
पहरेदार बनल
जे ठाढ़ रहैए
परिवारकेँ
ई कहैत
जे 'किछु नहि हेतैक
हम छी एखन जीबैत'
तऽ ओ होइत अछि
एकटा सद्‌गृहस्थक प्रेम।

•

प्रेम-22

लोक कहैए
महिषामवाली काकी
आ टुनटुन काकाक बीच
प्रेम अछि
सेहो आइसँ नहि
तहियेसँ
जहिया घरवला
जीबिते रहनि काकीक

लोक तऽ इहो कहैए
घरबलाक सहमतियेसँ
काकी लग एनाइ-जेनाइ
शुरू केलनि टुनटुन
किछु उड़ंती तऽ
इहो सुनबामे आयल
काका कहलखिन टुनटुनकेँ
'आब अप्पन इज्जत हम
तोरा सौंपै छियह
तूँ एकरा सम्हारिकऽ रखिह'

जे से
किछु निश्चित तऽ
हम नहि कहब
धरि एतेक कहब अवश्य
काका आ काकीक बीच
उमेरक अन्तर

पैंतीस सालसँ
कम नहि होइतय
कतय काका
नाति-नातिनवला
आ कतय काकी
बीससँ बाइस बरखक

कएक जगह काकाकेँ
तऽ कनियाँक माय
देखितहि घुरा देलकनि
बरियाती बिन बियाहने
घुरल घर
बड़ छी-दुरछी भेल
सम्पूर्ण समाजमे
अगबे घीमे
छानल पूरी
कुमारि तरी
खयने रही हम
से एखनो मोन अछि हमरा
मुदा बियाह
नहि भेल रहय
कनियाँक माय कहलक
'बरू बेटी कुमारिये रहती
इनार-पोखरि धँसती
एहन बुढ़वा वरसँ
हम नहि बियाहब एकरा'

मुदा काका
बिन बियाहल
नहि रहलाह

जहिया घरवाली
मरल छलनि
यानी हीराक माय
मरल छलीह
तऽ भरोस नहि रहैक लोककेँ
आब एहि जीवनमे
ओ दोसराइत देखता
धरि देखला
सोझाँ-सामनी
दिना-दृष्टिये
वरण कऽ केँ लऽ गेलनि
महिषामवालीक माय
महिषामवालीक लेल
घर-अँगना
पाइ-कौड़ीक
तेहन ने सपना
देखायल गेलनि
जे ओ नहि, नहि कहि सकलीह
की करितथि
बिन बापक बेटीकेँ
ककर अंक लगबितथि
कोना इज्जत बँचबितथि
तेँ बियाहि देलीह
साठि वर्षक
नाति-नातिनवला संगे
बीस-बाइस वर्षक बेटीकेँ

ओ तऽ ओ जमाना रहय
जे नूतन मुँहसँ
किछु नहि बाजल रहय

आइ-काल्हि बाली बात रहितय तऽ
बेदी तर बैसबो नहि करितय
पहिनहि भागि जइतय
से नूतन बियाहल गेलीह
दूती वरसँ
आ चतुर्थीयेक परात
बिदा कऽ देल गेलीह
सासुरक लेल
भरि पेट खयबे करतै
नीक नुआ पहिरबे करतै

मुदा महिषामवालीक मोन
नहि मिललनि
काकासँ कहियो
तन तऽ मिलल हेतनि अवश्ये
तेँ ने दू-दू टा बेटाक
माय बनलीह
आ जखन पहिल बेटा
जनमल रहनि हुनका
तऽ जय-जय कऽ उठल
गामक लोक
मिसरी बाँटल गेल
टोल भरि
ताहि दिन मिठाइक
बेसी चलनसारि नहि रहय
तीनटा बेटी जनमा
जखन मरल रहथि
हीराक माय तऽ
गामक लोक
हिया हारि देलक

आब फल्लाँ जी
निपुत्रे मरताह
वंश बुड़ि गेलनि हुनकर
से वंश बुड़लाहा
राखि लेलीह
महिषामवाली काकी

कालक्रमे काका
बूढ़, आरो बूढ़
होइत गेलाह
आ काकी
आरो जुआन
कखनो एकरासँ
तऽ कखनो ओकरासँ
जोड़ल जाइत रहलनि
हुनकर नाम
अन्तमे
एक डारि पकड़िकऽ
बैसि रहलीह
टुनटुन काकाक नाम

आब काका
अपने नहि छथि जीबैत
सिनूर-काजर
मेटा लेने छथि काकी
चूड़ीविहीन अछि हाथ
धरि टुनटुन काका
आ काकीक बीच
जे प्रेम छल पूर्वमे
से एखनो अछि वर्तमान

लोक लाज-समाज
निन्दा कऽ कैँ
थाकि गेल
मुदा नहि काका थकलाह
काकीसँ
आ नहि काकी थकलीह
काकासँ
दुनूक बीच
जे प्रेमक बन्धन छल
से एखनो अछि ओहिना।

•

प्रेम-23

जखन पच्चीसे वर्षक वयसमे
वैधव्यक डाँग
पड़ि गेल रहनि
लाल काकीकेँ
तऽ चारिये वर्षक बेटा
आ दुइये वर्षक बेटी रहनि
हाय-हाय करय गामक लोक
एतेक टाक उमेर
असगरे कोना कटती रमौलीवाली
बिन पुरुषक नारि

काकाक वियोगमे
पाँच हाथक नामी-नामी केश
काकी कटा फेकलथि
सिनूर-काजर तऽ
लोके मेटा देलकनि
जहिया कलकत्तासँ
तार आयल रहनि
काकाक मृत्युक मादे
तऽ श्वेत वस्त्रमे
लेपटा लेलनि अपनाकेँ

से वैधव्यक चिर दुःख
आ एकाकी जीवन
काकी काटि लेलीह
कोन-साग खाकऽ

कहुना जीवन बिताकऽ
देव-पितरक संग-संग
काकाक फोटो पर
सेहो फूल-जल चढ़ाकऽ
लोक कतबो हँसल
कतबो बाजल
लाल काकी नहि मनलीह
कहलीह– 'आब एहि जीवनमे
हुनका सिवा तऽ दोसर पुरुष
नहि आओत आन
तेँ सदेह छलाह
वा विदेह छथि
हमर पति तऽ वैह रहताह'
हमर प्रेमी तऽ वैह कहौता
हुनके आशीर्वादे फड़त-फूलत
हमर फुलवारी

से भेबो कएल
आइ धन-धान्यसँ
भरल-पूरल अछि
लाल काकीक परिवार
लोकसँ भरल छनि घर
नाति-नातिन, बेटा-पुतोहु
बेटी-जमाय
के नहि छनि
सभ छनि

कहियो परिस्थिति एहेन रहय
जे गहुँमक चिक्कसक अभावमे
मरुएक चिक्कस मिलेने रहथि

माछक झोरमे
गाढ़ करबाक लेल रसकेँ
से माछ परोसल गेल रहय
जमायक थारीमे
लाजे गड़ि गेल रहथि चानदाइ

आइ मैदा, घी, दूध-चीनीकेँ
नहि पुछैत छनि बाल-बच्चा
पंडित जीक माय
प्रोफेसर साहेबक मैंयाँ
कहि-कहि बजबै छनि लोक
साड़ी पर साड़ी
पठबैत रहैत छनि
बेटी-जमाय, नाति-नातिन
आ अपने बड़ दियमानसँ
कहैत छथिन
घरक आगूमे ठाढ़ भऽ कऽ
घर दिस इशारा करैत
'ई जे द्वारिकापुरी अछि ने
ओ हमरे द्वारिकापुरी छी
एकर मलिकाइन हमहीं छियैक'
कहियो घर छाड़बाक लेल
खढ़ नहि जुरनि
आइ तीन मंजिला मकान
दूरेसँ झलकैत अछि।

•

प्रेम-24

नवारीमे
कतेक लाठी
टूटल हेतनि
पुबाइ टोलवालीक देह पर
तकर तऽ गनतीयो
नहि मोन हेतनि हुनका
बिन लाठिये
बात कहाँ करैत छलाह
हुनकासँ पवन काका
एको रत्ती जँ
सासु-पुतोहुक बीच
कहा-सुनी भेल
रूसा-फुल्ली भेल
तऽ दे-दनादन लाठी
पुबाइ टोलवालीक देह पर

ओना ई कहा-सुनी
ई रूसा-फुल्ली
साधारणो कहाँ होइत छल
हुनका दुनूक बीच
भेड़ा-महिंषीक कानि
रहैत छलनि
हुनका दुनूक बीच
भगवान कोन राशिये
दुनूक मिलान कयने रहथिन
सासु-पुतहु बनेने रहथिन

से नहि कहि
कियो-ककरो
देखैइए नहि चाहैत छल

एक-दोसराक
काज करबासँ परेशानी
एक-दोसराक
खयबासँ परेशानी
एक-दोसराक
बैसबासँ परेशानी
एक-दोसराक
हँसबा-बजबासँ परेशानी
आ सभसँ पैघ परेशानी
एके घरमे
रहबाक विवशता
बीचमे पवन काका
मायकेँ सम्हारता
कि पत्नीकेँ
मायकेँ किछु कहता
तऽ बौहक पक्ष लैत छेँ
बौहकेँ किछु कहता तऽ
माय पियरगर लगै छै
अन्ततः सभ हरहरी-गड़गड़ी
बौहेक देह
झाड़ैत छलाह

एकर मुख्य कारण
घरमे पाइ-कौड़ीक
अभाव रहय
खेती-बारीक हाल

कोनो नीक नहि
तीन-तीनटा बच्चा
तीन प्राणी आरो
बेस नम्हर परिवार
ताहि पर साधनक अभाव

घरमे रहनि किछु नहि
आ लाल काकी अपनाकेँ
कोनो महारानीसँ
कम नहि बुझथि
कहथिन– 'एहि घरक
मलिकाइन छी हम
जेना कहबैक
तेना लोककेँ
रहय पड़तैक'
नापिकऽ
चाउर-दालि देथिन
गानियेकऽ
रोटी पकबै लेल कहथिन
धिया-पुताक घर
किछु तल-बिचल तऽ
भइये जाय सभदिन
अन्न-पानिक तऽ
अभाव रहबे करय
आइ-काल्हि जकाँ
लाल-कार्ड पर
मुफ्त अनाजक सुविधा
सेहो नहि देने रहय सरकार
सवैया आ डेढ़िया पर
पैंचि-उधार दिय महाजन

जकरा सधायब
आरो कठिन

से मारि खाइत-खाइत
पुबाइ टोलवालीक
सौंसे देहमे
चोटबात भऽ गेलनि
किछु दिन तऽ
तारपिनक तेल रगड़लीह
फेर एम्हर-ओम्हरक
वैद्य-हकीम कयलीह
मुदा किछु कयने
किछु नहि भेलनि
बातक विस्तार
होइतहि गेल
बेचारी कुहरि उठैत छथि
कुहरि बैसैत छथि

आब पाइ-कौड़ीक अभाव
नहि छनि हुनका लग
एकटा बेटा मास्टर
आ दोसर बेटा प्रोफेसर
लक्ष्मीक आगमनक संग
झगड़ो समाप्त भऽ गेल
आब सासु कहैत छथिन
'हमरा पुतोहु एहेन
ककरो पुतोहुए ने'
आ पुतोहुकेँ
सासुसँ
कोनो शिकाइत

नहि छनि
पवन काका अपनो
पंडिताइसँ
खूबे कमाइत छथि
मुदा पुबाइ टोलवालीक भागमे
सुख नहि छनि

वात गेठिया-वातमे
बदलि गेल छनि
डाक्टरे-डाक्टर फिरली
कियो नहि कहलकनि
जे ई बिन ऑपरेशने
ठीक हैत
बेचारीकेँ
ने उठल होइत छनि
ने बैसल

पवन काका बताह भेल
सभ लग कनैत छथि
'जँ पुबाइ टोलवालीकेँ
आइ किछु भऽ जेतै तऽ
दूटा रोटियो बनाकऽ
हमरा के देत'
आ ओही हाथसँ
बड़ सिनेहे
करैत छथिन
पुबाइ टोलवालीक
सभटा परिचर्या
जाहि हाथेँ
लाठी चलेने रहथिन। •

प्रेम-25

जहियासँ ज्ञान भेल
एके रंगक
उज्जर साड़ीमे
मैंयाँ के देखलहुँ
नहि लाल
नहि पीयर
नहि हरियर
नहि गुलाबी
कोनो रंग नहि
बेरंग भेल जीवन मात्र

मैंयाँक जीवनमे
कहियो कोनो पुरुष
आयल होयताह
तकर परछाहियो
नहि बाँचल
ओकर देह
ओकर आत्मा
ओकर मन पर

ओना बिना कोनो
पुरुषक हाथ पकड़ने
कोनो स्त्री
हमर मैंयाँ
नहि भेल हेतीह
एतेक बात तऽ

तय छल
आ पिता आ दीदी
तकर परिणामो
मुदा मैंयाँक सम्पूर्ण
अस्तित्व पर
कतहु कोनो ठाम
हम बाबाकेँ
नहि देखलहुँ
ओना कतहु ने कतहु
बाबा हेताह अवश्य
मैंयाँक हृदयमे
मैंयाँ स्त्री छलीह
ओहो सोलहे सालमे
वैधव्यकेँ प्राप्त स्त्री
तऽ स्वभाविक अछि
स्त्रीक कोमल मन
कतहु ने कतहु
पुरुषक वियोगसँ
व्यथित होइत होयत अवश्ये

धरि मैंयाँक हाव-भावसँ
एना नहि लागल कहियो
जे मैंयाँ अपन
चिर वैधव्यसँ
आहत भऽ
कनैत हेतीह
घरक कोनो कोनमे
सदैव हुनका देखलहुँ
कार्य लेल चिंतातुरे
एकर मुख्य कारण

इहो छल जे
मैंयाँ लग
पहाड़ सन जीवन छल
आ अथाह भूख
छोट-छोट दूटा
नेनाक भार
आ घरमे
दू पाइक
आमदनी नहि
बंजर जमीन
आ दूटा हाथक सिवा
किछु नहि छल
ओकरा लग
मुदा मैंयाँक मातृत्व लग
स्त्रीत्व अपन व्यथा
कात कऽ लेलक
ओ प्रेम कयलक
अथाह श्रमसँ
ओ प्रेम कयलक
अनन्त भूखसँ
ओ प्रेम कयलक
कहियो नहि
समाप्त होइवला
रोटीसँ
आ सम्हारि लेलक
अपन जीवन
सम्हारि लेलक
अपन नेना सभक भविष्य।

•

प्रेम-26

आइ सुतल रही तऽ
भोरहरबामे
एकटा सपना देखहुँ
सपनामे देखलहुँ
जे हम
एकटा कुमारि
खुआ रहल छी
ई सपना हम
आइये नहि देखलहुँ
किछु दिन पहिनहियो
देखने रही

जखन-जखन
सुख अबैए घरमे
जखन-जखन
दुःख घेरैए
घरकेँ
दाइ मोन पड़ैत छथि
दाइ सपनामे अबैत छथि
सपना तऽ सपना
ओनाहियो कहाँ
बिसरैत छियनि हम हुनका
बिसरैत अछि घरक लोक

आ ई दाइ
कियो आन नहि

हमरे लहुक वयसक
दिवंगता बहिन छथि
जिनका हमरा सभकेँ
छोड़िकऽ गेना
कतेक वर्ष भऽ गेलनि
तकर तऽ आब
गनतीयो नहि मोन छनि
मायकेँ
हुनका तऽ
एतबे मोन छनि
हुनकर पहिल संतान रहय
दुलरी बेटी सुधीरा
जकरा ओ
गंगा-कमलासँ
माँगिकऽ
अनने रहथि
कतेक देव-पितर
मनेने रहथि
जकरा आगमने
छूटल रहनि हुनक
बाँझिन पदबी

से सुधीरा
एक दिन अचानक
बिना कोनो
हारी-बिमारीकेँ
छोड़ि जेतैक सभकेँ
से कहाँ पता रहैक ओकरा
आ ई दैवक डाँग
जखन पड़लैक ओकरा पर

तऽ कराहि उठल ओ
तीन महिना धरि
ओ सेज परसँ
उठल नहि
पेटकुनियाँ लादि देलक
दक्षिणबरिया घरमे
बिना अन्नक
बिना पानिक

बोल-भरोस देनिहार सभ
थाकि गेल
पिता परबोधैत-परबोधैत
हारि गेलाह
पिता कहथि मायकेँ
'जँ हाट-बाजारमे
बिकाइवला वस्तु रहितय
तऽ कीनि कऽ
आनि दितहुँ
ई हम कतयसँ आनब
जे कतहु भेटयवला नहि'

किछु दिन एहिना
माय शोकमे रहलीह
फेर बहिनक
अनुभव करय लगलीह
अपना घरमे
अपना चारूकात
तहियासँ
जहिया कहियो
कोनो काज-परोजन

होइए घरमे
कोनो विपत्ति-बाधा
घेरैए घरकेँ
दाइ सुमिरल जाइत छथि
पूजित तऽ ओ छथिहे
कुलदेवी काली
आ बिषहाराक संग-संग
पूजा घरमे

आइ दाइ नहियो भऽ कऽ
छथि अपना घरमे
अपना लोकक बीच
खास कऽ केँ
मायक हृदयमे
जखन कखनो
जड़ो-बोखार लागल होयत
माथो दुखायल हैत
माय दाइकेँ
सुमरि लैत छथि
'दाइ अपने तूँ चलि गेलें
एकरा दुनू भाइ-बहिनकेँ देखही
तोरे भारे-भरतबे छौक
ई दुनू भाइ-बहिन'

से भेबो कएल
जहिना बड़की संतानसँ
माय निराश भेलीह
तहिना छोट संतान सभसँ
सभ मनोरथ पूर भेलनि
आ एकरा माय

दाइयेक पुण्ये-प्रतापे
मनैत छथि
ओ मनैत छथि
बेटी हमर नहियो भऽ कऽ
अछि हमरा सभक बीच
एकरा सभक
रक्षा कवच बनल

जतबे माय
हमरा दुनू भाइ-बहिनसँ
प्रेम करैत छथि
ततबे दाइयोसँ
पहिल आम
पहिल लताम
पहिल अन्न
पहिल पकवान
बिना दाइक निमित्त
कुमारिकेँ खुएने
घरमे माय
ककरो खाय कहाँ दैत छथिन
ओ तऽ कोनो काज-परोजनमे
पहिल साड़ी दाइक निमित्ते
कुमारिकेँ पहिरबैत छथि
तखने ककरो आनकेँ
पहिरबैत छथि।

•

प्रेम-27

जखन बियाह रहैक रामकालीक
तऽ कम नतीजा
नहि लागल रहनि
जयरूद्र काकाकेँ
वेदिये तरसँ
बाथरूमक बहाने
भगैक फिराकमे रहथिन
लदियामीवला पाहुन
जखन कन्यादानक बेरमे
रामकालीक हाथ
लदियामीवला पाहुनक हाथमे
देलखिन तऽ
लाइट पर चमकि उठल
गोर हाथ पर
कारी काथ
अवचंक लऽ लेने रहनि
लदियामीवला पाहुनकेँ
रामकालीक रंग-रूप देखि

तकर मुख्य कारण
इहो रहय
बियाहसँ पहिने
जे लड़की हुनका
देखाओल गेल रहनि
ओ एकदम झलक्का गोरा
जकरा देखितहि

हँ, कऽ देने रहथिन
लदियामीवला पाहुनक बाबू
सोचलनि सूर्य सन बेटा अछि
तऽ चान सन पुतहु हेती

मुदा रामकाली तऽ रहय
नामे अनुरूप कारी
कही जे नामो रूपे देखिकऽ
रखने रहय लोक
लोककेँ तऽ
इहो आशंका रहैक
देखा-सुनाकेँ तऽ
एकर बियाह
नहिये हैत
तेँ झाँपि-तोपिकेँ
कथा-वार्ता कएल गेल
रामकालीकेँ
बेदी तर बैसायल गेल

मुदा सभसँ छल दगरिनोसँ छल
से कोना होइतय
अन्ततः सत्य
सभक समक्ष
आबिये गेल
आ जखन सत्य
सोझाँ आयल
तऽ विस्फोट भेल
परमाणुवला विध्वंशक विस्फोट

पाहुन रातिमे तऽ

देहगर-दसगर
सार सभक डरे
जे पीठ पर बुझू ठाढ़ रहनि
हुनका पकड़सँ
नहिये भागि सकलाह
धरि भोर होइत-होइत
पीरे धोती पहिरने
माथ पर पाग लेने
लाथ लगाकऽ
जे भगलाह
से अपने अँगनामे
जाकऽ रूकलाह
ओनाहियो लदियामी
आ जपदेवपट्टीक दूरी
कोनो खास नहि अछि
बान्हक एहि पार जपदेवपट्टी
बान्हक ओहि पार लदियामी

पाहुन जे पहुँचलाह अँगना
तऽ आश्चर्य नहि लागल ककरो
बरियातीक संगे-संग
ई बातो घुरि आयल छल
जे कनियाँ खापड़ि सन
कारी अछि
कपार जरि गेल सुरेशबाकेँ
बरक माय
पहिनहिसँ
छाती पीटि-पीटि
कनैत छलीह
बेटाकेँ देखितहि

आरो कानय लगलीह
'हे! भगवाना कोन कसूर भेल हमरासँ
जे गहुँममे
मरुआ फेंटि देलियै'

भरोस नहि रहैक लोककेँ
जे रामकालीक घर बसतैक
पाहुन जखन मनाकऽ
घुराओल गेलाह
तऽ बड़-बड़ लोकक
जुटान भेल अँगनामे
धरि तैयो ओ
मूड़ी जे निच्चाँ कयलाह
से ऊपर कहाँ कयलथि
अस्सी मोन पानि
पड़ि गेलनि माथ पर
जकर भार उठेने नहि
उठनि हुनकासँ

चुँकि रामकाली
हमर संगी रहय
तेँ वरकेँ मनेबाक भार
हमरो ऊपर आयल
हम तऽ स्वयं
शृंगार कयने रही रामकालीक
आ बरियाती लेल
जे बनल रहय
घी वला लड्डू
ताहिमेसँ पाँचटा लड्डू
रामकाली स्वयं हमरा देने रहय

घरक लोकसँ चुपचाप

से वरकेँ
मनबैत-मनबैत
जखन हम
थाकय लगलहुँ
लागल हारियो जायब जल्दीये
तऽ 'वर' मानि गेलाह
विश्वास तऽ नहि छल
एना अचानक ओ
'हँ' कहि देताह
ओ अपना बाम भागमे
रामकालीकेँ स्थान देताह
मुदा ई भेल
अचानक अस्सी मोन पानि
बान्ह तोड़िकऽ
बाहर बहि गेल
आ छिट-पुट
साओनक फुहार
पड़य लागल
चारूकात आनन्दे-आनन्द

तहियासँ
जहिया कहियो
पाहुन कलकत्तासँ
सासुर अयलाह
हमरासँ अवश्य भेंट कयलनि
हमरा तऽ हमरा
रामकालियोक लेल
हुनका हृदयमे

कहियो दुराव नहि रहल

एकटा समान रंग-रूपवाली
जोड़ीसँ बेसी
आइ सफल अछि
रामकालीक दाम्पत्य जीवन
बेटा-बेटी
पुतोहु-जमाय
नाति-नातिनसँ
भरल-पूरल अछि घर
आ कनियो रामकालीक
माथ दुखाइत अछि तऽ
लदियामीवला पाहुन
कहैत छथिन
'अहाँ नहि रहब
तऽ हम
जीबे नहि करब।'

•

प्रेम-28

जखन गहुँमन
डँसने रहनि
रतन काकाकेँ तऽ
लोकक करमान लागि गेल रहय
कोन देवता
कोन भगता
कोन डाक्टर
ने बजाओल गेल
मुदा नहि बचा सकलनि कियो
नहि बचि सकलाह ओ
छने-पलखमे पंछी
पिंजड़ा तोड़िकऽ
उड़ि गेल
हाक्रोस करैत
कानल रहय
घर-परिवार, समाज

मुदा सभसँ
जे अचरजक बात
लागल सभकेँ
ई ओ
जे मरबासँ पहिने
रतन काका कहलखिन
'कने नवादा वालीक मुँह देखा दे'
जाहि नवादा वालीक मुँह
ओ कहियो नहि

देखय चाहलाह जीवनमे
आ करमान लागल
लोकक बीच दलान पर
बजाओल गेलीह
नवादा वाली
काकाक आँखिसँ बहल
दू बून्द नोर
आ हाथ जोड़ि
मँगलनि माफी नवादा वालीसँ

नवादा वाली
यानी हरिनाथक माय
यानी अपन घरवालीकेँ
काका कहियो नहि देखय चाहलाह
आँखिसँ
तकर मुख्य कारण रहय
नवादा वालीक कुरूपता
ई कुरूपता हुनका
जन्मजात तऽ नहि
भेटल रहनि उपहारमे
मुदा हारी-बिमारीक कारणे
ओ कुरूप कऽ देल गेलीह
छूरी सन सुन्दर नाक
काटि डाक्टर
हुनका नककट्टी बना देलक
ताहि दिनसँ
मूल नाम बिसरा
लोक हुनका
नककट्टी-नककट्टी कहय लागल
ओ तऽ भरल-पूरल घरक

बेटी रहथि
लड़की देखि
बियाहोक प्रथा नहि रहय
ताहि दिनमे
तेँ हुनकर बियाह भेल
ततेक ने दान-दहेजमे
देलकनि बाप
जे गामक लोक
देखितहि रहि गेल

मुदा कपार जरल रहैक
नवादा वाली काकीक
जे रतन काका सन
व्यसनी आ बेरोजगारसँ
बियाह भेलनि
किछु नशाक पूर्ति लेल
किछु पेटक खातिर
नवादा वालीक बापक देलहा
सभटा कीमती सामान
धीरे-धीरे काका
बेचि देलनि
अन्तिम कटहरक सन्दूक
जखन ओ बेचय लगलाह
तऽ पितासँ
नहि रहल गेलनि
ओ दुगूना पाइ लगाकऽ
ओकरा अपने
कीनि लेलाह
जे एखनो अछि
हमरा घरमे

पिताक गेलाक बादो
जाहिमे शिवपुराण
विष्णुपुराण, रामचरितमानस
गीता, महाभारत सन
अनेको विशिष्ट किताबक संग
जमीनक नक्शा अछि राखल

रतन काका कहियो
नवादा वाली काकीकेँ
मनुखमे गनती
कहाँ केलखिन
सभ दिन हुनका
जानवरे बुझैत रहलखिन
आ जानवरे सन व्यवहारो
हुनका संग करैत रहलखिन
ओ तऽ ईश्वरक मर्जी कही
वा भाग्यक प्रबलता
जे दूटा संतानक
माय बनलीह
नहि तऽ कतऽ भऽ कऽ
रहितथि ओ

काकाकेँ जे नीक लगैत छलनि
ओ नीक मुँह वाली स्त्री
भने ओ अपन हुअ
वा आन
आ एहि नीक मुँह वाली
स्त्रीकेँ पसन्द करैत-करैत
तकैत-तकैत
जखन काका

समाय लगलाह
मृत्युक मुँहमे
तऽ मोन पड़लनि
खराब मुँह वाली
अपन घरवाली
आ हुनके मुँह देखिकऽ
अन्तिम आँखि मुनलनि काका

लोक चौरासी जोजन
घुमि अबैए
अन्त समयमे
अपने घरमे
विश्राम करैए
ओतहि ओकरा
शान्ति भेटैत छैक।

•

प्रेम-29

आइ साल भरिसँ
ऊपर भऽ गेलैक
आसी वालीकेँ मुइना
धरि रौदियाक मोन
नहि मानै छैक एखनो
जे आसी वाली आब
नहि अछि जीबैत

जखन कखनो
ओकरा पेटमे बात
घुरियाइत छैक
मोन दिन-दुनियाँसँ टुटैत छैक
ओ चलि आबैए
भरल-पूरल परिवारकेँ छोड़ि
बड़की गाछी
आ बैसि जाइए
आसी वालीक सारा लग
आ जे पेटमे बात रहैत छैक
हृदयमे दर्द रहैत छैक
से कहि दैए आसी वालीकेँ
कहियो-कहियो तऽ रौदिया
आसी वालीक सारा पकड़ि खूब कनैए—
'रनियाँ गे रनियाँ
कतऽ चलि गेलही गे रनियाँ
हमरा असगरे छोड़ि'
आ अपने गमछासँ

आँखि पोछैत घुरि अबैए गाम पर

माटिमे मिलल आसी वाली
की सुनैए, की नहि, से नहि कहब
धरि रौदियाक मोन अवश्य
भऽ जाइए हल्लुक

जहिया अनचोकेमे
आसी वाली स्वर्गवासी भऽ गेल रहय
कियो नहि कहैक रौदिया बाँचत
आसी वालीक वियोगे
सात बताहसँ
एक बताह भेल रहय रौदिया
ककरा कहैत छैक खेनाइ-पीनाइ
सभ बिसरि गेल रहय
धरि समय सभक मरहम होइत अछि
रौदियोक मोन मानि लेलकैक
आब आसी वाली नहि घूरत घर
एक बेर जे गाछी चलि गेल

आसी वाली माने
रौदियाक घर वाली
हमरा सभक नौएन
जे शुभ-अशुभ सभमे
हाजिर होइत छल
आ बिना कोनो हुज्जति कयने
जे लोक दैत छलै
से लऽ कऽ चलि जाइत छल
खुशी-खुशी

एकर विपरीत छल
रौदिया यानी
हमरा सभक नौआक स्वभाव
कोनो काज-परोजनमे
बिना हो-हल्ला कयने
ओ मानिते नहि छल
लोको ओकरा गुदानि लेने रहय
धरि दुनू परानीक बीच
तालमेल बहुत रहैक
एकटा आगि तऽ दोसर पानि
सैह कारण रहय
जे पाँचटा बच्चाक माय भेलाक बादो
रौदिया आ आसी वालीक बीच
प्रेम रहय बरकरार
मुदा मृत्युकेँ प्रेमसँ की मतलब
भावना-संवेदनासँ की लेना-देना
ओ अपन काज करैत अबैए
आ काज कऽ केँ चलि जाइए

आइ आसी वाली नहि अछि
मुदा आसी वालीक लेल
रौदियाक हृदयमे प्रेम अछि
भलेहि रौदिया
आसी वालीक यादिमे
ताजमहल नहि बना पाबय
मुदा आसी वालीक नामसँ
एकटा प्रेमक दीप
ओ अवश्य लेसैत अछि
जकर चर्चा छैक
सम्पूर्ण परोपट्टमे। •

प्रेम-30

जहिया अहाँ हमरा जीवनमे
आयल रही
तहिया अहाँक हृदय रहय
प्रेमसँ परिपूर्ण
एकदम निश्छल
गंगोत्रीक गंगा सन
पावन पारदर्शी
जकर स्पर्श मात्र
सुखदाइ छल
हमरा लेल
आ हम अपना आपकेँ
भाग्यशाली बुझी
अहाँक संग पाबि

धीरे-धीरे गंगा
सहरजमीन पर एलीह
आ मैल होइत गेलीह
आब उपरे-उपर
स्वच्छ त' देखाइत छथि
धरि साफ छथि नहि
आब स्नान-ध्यान मात्रसँ
सुखक कल्पना
नहि कयल जा सकैत अछि
आब भीतरमे
जमल छनि गाद
जकरा साफ केने बिना

गंगाक स्वच्छताक कल्पना
नहि कयल जा सकैत अछि

आब अहाँ मैल भेल गंगा सन
मैल छी अपना आपमे
उपरे-उपर भलेहि
चमकैत हुअय
अहाँक बतीसी
धरि हम जनैत छी
भीतरमे धेने अछि पेड़िया
जकर दुर्गंध
हमरा साँस धरि
दूरेसँ अबैत अछि।

•

प्रेम-31

जाबत नानी जीबैत छलीह
सनेसमे अबैत रहल
मामा गामसँ आम
फैजिली आम
सेर-सेर भरिक आम
जे काँचे मीठ लगैत छल
दाँत तर मुच-मुच करैत छल
बान्हल रहैत छल
बेटीक हिस्सा
सभ बेर फैजिली आम

नाना जाबत जीबैत छलाह
अपने आनथि
झोरा भरि-भरि
फैजिली आम
नानाक परोक्षमे
नानी साँठय लगलीह
मामाक हाथे
फैजिली आम
धरि नानीक
परोक्ष होइतहि
बिसरा देल गेलीह बेटी
बन्द भऽ गेल
सनेसबारी मदक
ओ फैजिली आम

आम तऽ एखनहुँ
फड़ैत हैत
धरि आब नहि अबैत अछि
मामा गामक
ओ फैजिली आम
एकर कएकटा कारण हैत
मुख्य कारण ई
जे नाना नहि रहलाह आब
नानी नहि रहलीह आब
बेटी जँ छथिये
तऽ भाव के राखत आब
भाव के बूझत आब
बिन माइ-बापक
नैहरो कोनो
नैहर होइत छैक!

•

प्रेम-32

भरल जुआनीमे
जखन चारि-चारि टा
नेनाकेँ जन्मा-जन्मा
छोड़ि पड़ेलाह काका कलकत्ता
तऽ काकीक मोनमे
एकटा आशाक बान्ह पड़ल
नहि राजसी ठाठ बाटे
तऽ पेटो भरि अन्न
आ देहो भरि वस्त्र
तऽ अवश्य भेटत
नेना सभकेँ
नहि प्राइवेट
तऽ सरकारियो स्कूलमे
नाम तऽ लिखाइये जायत
नेना सभक
बेसी नहि तऽ
दूओ आखरक बोध
तऽ भइये जेतैक
ओकरा सभकेँ
आ जहिया काका
कलकत्ता गेल छलाह
ताहि दिनसँ
आँगुर पर दिन
गानय लगलथि काकी

मुदा ओ दिन

नहि आयल कहियो
जहिया काका
पठेने होथि पैसा
कयने होथि फोन
लेने होथि
धिया-पुताक सुधि
आयल तऽ मात्र
उड़ैत-उड़ैत बात
जे काका एकटा
बंगालिनक
मोहपाशमे लेपटाओल छथि
आ सभटा कमा-कमा
ओकरे हाथमे दैत छथिन
ओकरे लेल
जमीन कीनलाह
ओकरे लेल घर बनेलाह
ओकरे धिया-पुताकेँ
अपन धिया-पुता बुझैत छथि
आ बंगालिनक बच्चा
हिनका दादू-दादू कहि
अनघोल कयने रहैए
बंगालिनक मुँहसँ
हिनका लेल
मधु चुबैए

काकीक मन पर
जे बीतलनि
से तऽ बीतबे कयलनि
जीवनो बंजर-विरान भऽ गेलनि
कहबी छैक— सिनूर जरल, काजर जरल

पेटो बज्जर खसल’
से तेना बज्जर
खसलनि पेट पर
जे कियो
पैंचो-उधार दैक लेल
तैयार नहि होइनि
लोक कहनि
‘ई तऽ खाकऽ पचा लेत
एकरा की पैंचि-उधार देब’
से सत्यो छल
काकी बिन पुरुषक नारि
कतयसँ सठबितथि
पैंचि-उधारी
अपना जोग
वस्त्रक अभाव तऽ छलनिहें
जे सोहागक निशानी
एक बाँहि चूड़ी
सेहो नहि जुटनि
जानि-बुझिकऽ
चुनि-चुनि पहिरथि
मोटका चूड़ी
जे जल्दी फूटय नहि
कुटाओन-पिसाओन करथि
लोकक घरमे
आ जे कोन-साग जुटनि
ताहिसँ
पेट भरथि अपनो
आ धियो-पुता सभक

मोने अछि

हमरा ओहिना
हमर संगतुरिया रहय रूना
काकीक छोट संतान
छोटकी बेटी
जे बेसी काल
बाटी लऽ भात माँगय
आबय हमरा अँगना
कएक दिन तऽ माय
ओकरा दैक
कएक दिन दैत-दैत
लुलुएबो करैक
से रूना
अन्नक अभावमे
माटि खाय लागल
आ ततेक माटि खा लेलक
जे पूरा देह
पीयर भऽ गेलै
से नहि बचि सकल
वैद्योजीक प्रयासे
एखनो नजरिमे नचैए
ओ दृश्य
हाक्रोस करैत कनैत काकी
कनैत गीता-सीता

तकर बादहुक
बहुत बाद धरि
काका नहि अयलाह
ने एकहुटा पाइ पठेलनि
तामसे-पित्त काकी
कहैए—'आब एताह तऽ

सतबढ़नासँ झाँटि देबनि
आब हमरा लेखे ओ की
आ हुनका लेखे हम की’
काकी चुड़ियो पहिरनाय छोड़लनि
आ सिनूरो कयनाइ
धिया-पुता समाजमे
समाजक हाथे
उलाउ-चुलाउ
होइत रहल
जतेक मुँह
ततेक बात
ककरा-ककरा जवाब दितथि
ककरा-ककरासँ
झगड़ा करितथि

से काका
अचानक एक दिन
पन्द्रह सालक बाद
जखन घुरलाह घर
तऽ काकी लेल
एक जोड़ा ताँति साड़ी
आ धिया-पुता लेल
चॉकलेट-बिस्कुट लऽ
तऽ देखनिहारक भीड़सँ
अँगना भरि गेल
आ काकी गलिकऽ
मोम भऽ गेलीह
केबाड़क पाट लग
कियै मुँहसँ
एकहु शब्द बहरेतनि

कियैक एकहु बेर
किछु बजती
लागल गंगा
प्रवाहित होमय लगलीह
अपना रस्ते
पुनः एक बेर
प्रबल वेग लेने
आ जखन केबाड़क
पाट लगसँ
बाहर निकललीह
तऽ धेलहा नवका
नुआ पहिरने
जे पहिल बिदागरीमे
देने रहनि माय
हाथमे चूड़ी पहिरने
जकरा संजोगिकऽ
रखने रहथि
अपन श्रृंगारक पेटीमे
आ भरि सोंथ
ललका सिनूर लगा
काका जे देखलनि
से तऽ देखबे कयलनि
लोको सभ देखितहि रहि गेल!

•

प्रेम-33

तीनटा बच्चाक बाप फूलन
आ चारिटा बच्चाक माय फूलवतीक बीच
जखन प्रेम प्रसंगक
चर्चा उठल
तऽ बुझू जे
दाँते आँगूर
काटय लागल लोक
'धौर एहनो कतहु भेलैए
बुढ़बा-बुढ़िया चलल
रास रचाबय
प्रेम करय
प्रेम छौंड़ा-छौंड़ी करैत अछि
कि मौगी-मनसा
ई प्रेम-तरेम किछु नहि छियैक
ई मात्र देहक
आगि छियैक
जे अपना घरवला
अपना घरवालीसँ
नहि मेटाइ छैक
नहि तऽ कहू
एहनो अचरज देखलियैक अछि
आधा उमेर बीत गेलैक
धी-जमाय भेलैक
आ कहैत छैक
प्रेम करैत छी'

बात तऽ
किछु सत्ते छल
ई पाकल प्रेम
ककरो पचिये नहि रहल छल
जखन कि मिठौंसक
सम्पूर्ण सम्भावना छल बाँचल
मुदा एखनहुँ लोक
प्रेम लेल
जाति देखैए
धर्म देखैए
उमेर देखैए
मन नहि देखैए
जे कि
नहि देखलनि फूलन
नहि देखलीह फूलमती
ओ तऽ मात्र कयलनि
एक-दोसरासँ प्रेम
कहलनि फूलमती
'बियाह भेल
प्रेम नहि
पति भेटल
प्रेमी नहि
तहिना कहलाह फूलन
'बियाह भेल
बच्चो भेल
प्रेम नहि बुझलियैक
ककरा कहैत छैक
अनपढ़ पत्नी
घर-परिवार
बाल-बच्चाक सोइरी

कोबरा-माँड़बमे
तेना ने ओझरेलीह
जे प्रेम देबा आ लेबाक लेल
हुनका पलखतिये
नहि रहलनि’

से फूलन आ फूलमती
आइ कतेको वर्षसँ
एक-दोसराक
प्रेममे छथि
एक-दोसराक भावनाक
सम्मान करैत
लोकक आशंकाकेँ
खारिज करैत
जे ‘देहक भूख छी
कनिये दिनमे
मेटा जायत’
जखन कि
फूलन आ फूलमतीक
देह मिलबाक सम्भावना
नहिकेँ बराबर
रहल अछि
आइ धरि।

•

प्रेम-34

हमरा घरमे अछि
एखनो एकटा
फुलही बट्टा
जकरा माय
जमुनियाँ बट्टा
कहैत छथि
आ फुलहीये एकटा
तमघैल सन लोटा
जकरा बड़ सिनेहसँ
सरियाकऽ
रखने छथि माय
पिताक सन्दूकमे
पिताक गेलाक बाद
सन्दूकक चाभी
माइयेक हाथ छनि
आ ओ बट्टा
आ लोटाक मलिकाइन
ओहो छथि

ई अलग बात
जे आब ओहि बट्टामे
कियो नहि खाइत अछि
ओहि लोटामे
कियो नहि
पानि पीबैत अछि
धरि धरोहर रूपेँ

राखल अछि
पिताक सन्दूकमे
मायक देख-रेखमे

जाबत मैंयाँ जीलीह
ओही जमुनियाँ बट्टामे
खाइत रहलीह
भरि-भरि बट्टा भात
ताहि ऊपर दालि
ताहि पर तरकारी
एखनो नजरिमे झलकैए
मोख लागल खाइत
मैंयाँक मुँह
भरि-भरि हाथक कर
बुढ़िया ठूँसय मुँहमे
आ गलोठैत रहय
धीरे-धीरे

कएक बेर तऽ
हमरा अनसोहाँत
लागि जाय
जखन यैह चालि-व्यवहार
ओकरा देखी
भोजो-काजमे
ककरो दोसरोक अँगनामे
तऽ मायकेँ आबि
समाद कही हम

सत कही तऽ
हमरा लाज लागय

बुढ़ियाकेँ
ओना खाइत देखि
हुअ जे लोक की सोचैत हैत
एहि बुढ़ियाकेँ घरमे
अन्न नहि भेटैत छैक
जे एना
गलोठि-गलोठि खाइत अछि
जखन कि धन-धान्यसँ
परिपूर्ण छल परिवार
मैंयेंक पुण्ये-प्रतापेँ
पितेक मेहनतिक बलेँ
तहिना पिता
जाबत जीलाह
भरि गामक भोज
ओ ओही लोटाकेँ
हाथमे लऽ कऽ खयलनि
ओहिये लोटाक पानिसँ
हारल-थाकल
प्यास मेटेलाह
भोज तऽ भोज
घरोमे ओ
ओहि लोटाकेँ छोड़ि
दोसर लोटाक जल
नहि ग्रहण कयलनि कहियो

जखन जेठ-बैशाख तपय
तऽ एक लोटा जलमे
एक बाकुट चीनी घोरि
आ ताहिमे एकटा
सौंसे कागजी नेबो गारि

घोरिकऽ पीबि जाइथि पिता
आ ओही बलेँ फेकि आबथि
एक छिट्टा गोबर
एक छिट्टा छाउर
खेतमे
आ छिट्टा भरि खेढ़ही लऽ
घुरि आबथि घर

जहिया पिता नहि रहलाह
मैंयाँ नहि रहलीह
लोक सभ कहय लागल
ई जमुनियाँ बट्टा
पचही वालीक घाट पर
उसगरि दियौक
ई तमघैल वला लोटा
बौअन बाबूक निमित्ते
पात पर चढ़ा दियौ

माय नहि मानलक
'हुनका दुनूकेँ तऽ
नहि बचा सकलहुँ हम
धरि हुनका दुनूक यादिकेँ
सहेजिकेँ राखब हम
अपना घरमे
अपन नजरिक सोझाँ'
आब ओ जमुनियाँ बट्टा
आ तमघैल वला लोटा
धरोहर बनल अछि हमरा घरक
जकर सुरक्षामे
लागल रहैत छथि माय। •

प्रेम-35

मैंयाँ कहैत छलीह
जखन तोहर पिता जनमलहु
तखन ओकरा दूध पीबाक लेल
छठिहारक भारमे
देने रहथिन
ओकर नाना
हमर पिता
सनेसमे गाय
आ तहियेसँ
चलि आबि रहल अछि
ई जे खुट्टा पर गाय अछि ने
तकर पीढ़ी

से सरिपहुँ
जहियासँ ज्ञान भेल
गायविहीन खुट्टा
नहि देखलहुँ
मालक घरमे
एक जोड़ा बड़द
एक जोड़ गाय
रहिते छल सभ दिना
जकर निमेरा करएमे
बितैत छलनि
पिताक दिन

बड़द खेतमे खटय

आ गाय
खुट्टेसँ बान्हल रहय
दूधे देब
ओकर गुण-धर्म जे रहय
कालक्रमे ट्रैक्टरक
चलनसारि भेल
आ बड़द रखबासँ
थाकय लगलाह पिता
से गाय रहि गेल
आ बड़द बिका गेल
सझिया मालघरक
असगरे मलिकाइन
बनलीह गाय
जे पितासँ
बहुत प्रेम करैत छलीह
जिनकासँ पिता
बहुत प्रेम करैत छलाह

अन्हारोमे जँ आहटि
लागि जाइ ओकरा
पिताक अयबाक
तऽ हुम्हरय लगैत छल ओ
आऽ... माँ...आऽ...माँ
करय लगैत छल ओ
नाँगरि डोलबय लगैत छल
मूड़ी हाँनय लगैत छल
आ जाबत पिता
ओकर मुँह नहि पोछैत छलाह
ओ ओहिना
करैत रहैत छल

तहिना पितोकेँ
प्रेम छलनि
अपन गायसँ
अपन कान्ह परहक
गमछासँ पिता
गायक मुँह पोछैत छलाह
ओकर काँची-पीची
हटबैत छलाह
आ जतयसँ होइत छलनि
बाँसक पात
अनितहि छलाह
खढ़-पात
नोचितहि छलाह
तखन भरैत छलाह
ओकर पेट
ओहो बड़ दुलारू
हरियरी बिछि-बिछि
खा लैत छल
आ सुखेलका नार
कात कऽ दैत छल
कखनो-कखनो पिताकेँ
बड़ तामस चढ़नि
आ तमसाकऽ कहि देथिन
'आब हमरा खेब'
सभटा जँ फेकबे करब'
तऽ हमहीं टा बचलियऽ
खाइ लेल'
मुदा गाय लेखे धनि सन
ओ अपन बानि
नहि छोड़ैत छल

एक बेर तऽ
एना भेल
जे गायक
बहुत संख्या बढ़ि गेने
पिता ओकर निमेरा करबासँ
असक्षम होमय लगलाह
ओ पड़ोसियाक हाथमे
दऽ देलखिन
एकटा गायक बाछा

पड़ोसिया बसैत रहय
हमर छहरदेबालीक
ओहि कात
जखन पिता
अँगना आबथि
किछु बाजथि
बाछा करय लागय
आऽ... माँ...आऽ...माँ

एक दिन पिताकेँ
नहि रहल गेलनि
आ ओ ओकरा
पड़ोसियाक खुट्टा परसँ
अपना खुट्टा पर
लऽ अनलाह
बाछा खुशीसँ
दू-दू हाथ ऊपर
कूदय लागल

एहेन छल
पिता आ गायक प्रेम
जे बिनु कहनहि
बुझि जाइत छल
एक-दोसराक बात
एक-दोसराक भाव
से पिता जखन
नीम बेहोशीक हालतिमे
हॉस्पीटलमे
भर्ती भेलाह
तऽ अर्ध चेतनोवस्थामे
एके बात बड़बड़ाथि
'गायकेँ खाय लेल
की देबैक'
आ खुट्टा पर बान्हल
गायक आँखिसँ
बहैत रहल
पिताक वियोगमे
दहो-बहो नोर!

•

प्रेम-36

पिता जखन
दुइये बरखक रहथि
तऽ पितृविहीन
भऽ गेलाह ओ
नहि बुझलखिन जीवनमे
पिता ककरा कहैत छैक
पिताक प्रेम
केहेन होइत छैक
हुनका लेखे
पिता आ माय
दुनू मैये रहथिन
जकरा संग
पिता कखनो लड़बो करथि
तऽ कखनो ओकर
आदरो सम्मान करथि
धरि मैयाँक पुछने बिना
कोनो काज नहि करथि कहियो

से पिता
जखन पिता बनलथि
तऽ सामान्य पिता सन
व्यवहारक अपेक्षा
नहिये रहनि मैयाँकेँ
धरि पिता अन्य
कतेको पितासँ
विशेष साबित भेलाह

हमरा सभक
पिता रूपमे
कने कठोर
कने कोमल
एन-मेन गुलाबेक फूल सन
सुगन्धि आ सुरक्षासँ परिपूर्ण

आइ हम जेहन छी
जाहि रूपमे छी
जतय छी
ओ एक मात्र पितेक प्रयासे
ओ समय
जखन बेटीक भविष्य
मात्र बियाह धरि
देखल जाइत छल
पिता सोचलनि
बियाहसँ आगुओ
आ अँगुरी पकड़ि सिखेलनि
जीवनक सभ तजूर्बा

एखनो हमरा जीवनक बागडोर
थम्हने अछि
मालघरक घूर तरहक
पिताक ओ सीख
जे पिता बड़ मनोयोगसँ
सिखेने रहथि
कुट्टी कटैत
डोरी बँटैत
पझायल आगिकेँ
आरो पजारैत। •

प्रेम-37

(उषा दीक यादमे)

दी! हमरा मोनमे हरदम
एहि बातक गुमान रहैत छल
जे हम
अपन अबैवला पीढ़ीकेँ
कहबै जे
हमर आँखि
उषाकिरण खानकेँ
देखने अछि
हमर कान
उषाकिरण खानकेँ
सुनने अछि
हमर हाथ
उषाकिरण खानक
स्पर्श कयने अछि
हमर हृदय
उषाकिरण खानक
प्रेमसँ सिक्त भेल अछि
हम उषाकिरण खानकेँ
मंच पर देखने छी
हम उषाकिरण खान संग
मंच पर बैसल छी
धरि एतेक जल्दी
एहि सभ सुखसँ
वंचित भऽ जायब
से नहि छल बूझल हमरा! •

प्रेम-38

(उषा दीक लेल)

दी! यैह भोर
रहय एक दिन
जहिया हँसैत
भास्करक फोटो भेजि
अहाँ कहने रही—'सुप्रभात'
आ हमर छाती
सूप सन
भऽ गेल रहय गर्वसँ
हमरा एहेन
अदना कवयित्रीकेँ
अहाँ एहेन खास लोक
जखन मान दैत छैक
तऽ यैह हाल होइत छैक
पद्मश्री उषाकिरण खान
जकरा एहि जोग बुझैत छैक
जे सुप्रभात कएल जाय ओकरा
तऽ भोर खासे होयत
ओकरा लेल

जहिया कहियो
भेंट होइ
'कामिनी आउ
बैसू हमरा लगमे'
आ अहाँ लगमे बैसैत हम
सौभाग्यशाली बुझी अपनाकेँ

हुअ कतऽ हम रस्ता परहक लजौनी
आ कतऽ अहाँ फुलबारी महक फूल
दुनूक कोनो ताले-मेल नहि

कएक बेर तऽ
मैसेज कऽ केँ
फोन कऽ केँ
कोनो कार्यक्रममे
जबर्दस्ती बजबा ली अहाँ
कही— कामिनी अहाँ अवश्य आउ
घर-परिवारकेँ
बहुत समय देलियै
आब घरसँ बहराउ
साहित्यकेँ समय दियौ'
आ हम घरसँ
सतमे बहराय लगलहुँ
एम्हर-ओम्हर
जतय कतहु काज भेल
हम जाय लगलहुँ

कएक बेर भेंट भेला पर
कही अहाँ
'ई गुलाबी गैंग
घरवास लेलक से
भोज नहि कयलक'
सतमे घरवास तऽ लेलहुँ हम
धरि भोज नहि कऽ सकलहुँ
घर स्त्रीक कहाँ होइत अछि
घर होइत अछि पिताक
घर होइत अछि पतिक

स्त्री तऽ मात्र
ओहि घरमे रहैए
घरकेँ घर बनाकऽ रखैए

दी! यैह भोर छी आइयो
जखन सभ किछु
सुन-बिसुन लगैए
मुइल पड़ल छी अहाँ
लादल फूलक भीतर
जकर कोनो गन्ध-सुआद
नहि लगैत होयत अहाँकेँ

कने कालक बाद
समर्पित कऽ देल जायत
अहाँक ई पार्थिव देह
अग्निकेँ
चिराइन गन्धसँ
भरि जायत
सम्पूर्ण वातावरण
किछु समयक बाद
सभटा जरिकेँ खाक
भऽ जायत
जेना एकटा युगक अन्त
धरि हमरा हृदयमे
ओहिना टिमटिमाइत रहत
अहाँक स्नेह-प्रेमक दीप
जकरा तेल आ बाती दऽ
कहियो जरेने रही
अहाँ एकदिन

•

प्रेम-39

बियाह तऽ भेलै
सामान्ये ढंगे
धरि बियाह भेलै
श्यामा माइक समक्ष
श्यामा माइक आँगनमे
दुनू पक्षक
जेठ सभक आशीर्वादे
प्रशासनक देख-रेखमे

जँ ई बियाह
नहि होइतैक
तऽ दू नहि
तीन जानक
बलि पड़ितैक
बिना कोनो
बीच-बचावक
स्थितिये किछु
तेहने रहैक
भरल पेट बच्चा
आ बरक बापक
आना-कानी
स्थितिकेँ
आरो बेसम्हार
कऽ देने रहैक

ओ तऽ सुकुर भेलै

टोल-परोसक लोक
गाम-घरक समाज
सम्हारि लेलकैक स्थितिकेँ
दू जाति
दू धर्म
दू वर्गक
दू प्राणीकेँ
एक कऽ देलक
पति-पत्नीक बन्धनमे
बान्हि देलक

ई प्रेम ओना
ककरो बिचारे तऽ
नहि भेल रहैक
मुदा भऽ गेल रहैक
ओना प्रेम बिचारिकऽ
कहिया ककरा भेल अछि
से प्रेम ताहि दिन भेल रहैक
बुच्चन कियोटक बेटी
आ बच्चा बाबूक
बेटाक बीच
जाहि दिन
गाममे
भरल जा रहल छल
धर्म-कर्मक कलश
यज्ञाहुति लेल यज्ञाग्नि
जोरल जा रहल छल
वृन्दावनक प्रसिद्ध अभिनेता
विषहरि स्थानमे
रासलीला कऽ रहल छल

ताहि प्रेमक परिणाम
बुच्चन कियोट
आ बच्चा बाबूक
तेसर पीढ़ी
धरती पर अयबाक लेल
उताहुल होमय लागल जखन
तऽ गाम-घरक समाज जागल
प्रशासन जागल
नहि चललनि
बच्चा बाबूक कोनो जोर
पुनीता आ पिन्टूक
दोसर पीढ़ी
आबियेकऽ रहल
जाहि लेल कहियो
खूनक धार बहि गेल छल
अतीतमे।

•

प्रेम-40

खापड़ि महक बालु जकाँ
मन धीपि कऽ तऽ
आगि भेल अछि
जँ सतर्कता नहि बरतब
तऽ जे जीनीस देबै ओहिमे
जरिकऽ छाउर भऽ जायत
खयबा जोग तऽ
नहिये रहत एकदम्मे
अहाँक उपेक्षासँ
आजिज आबि

धरि तैयो
सम्हारने छी मोनकेँ कहुना
ई कहैत परबोधैत
जे 'एहिना होइत छैक
जीवनमे ऊँच-नीच
एक रंग सभ दिना तऽ
किछु नहि रहैए
नहि सुख, नहि दुःख
नहि प्रेम, नहि समर्पण'

जखन बारह महिनामे
बारह रंगक समय बदलैए
तऽ ई चंचल मन
एक जगह
एक रंग

एक व्यक्तिसँ बन्हिकऽ
कोना रहि सकैए
एकरा तऽ पाँखि छैक
जे इच्छा शक्तिये
अदृश्य भऽ उड़ैए
डारिये-डारि
फूले-फूल
झाड़े-झाँखरे
नदिये-नाले
पहाड़े-मैदाने
कतय कोन जगह
कखन ई जाओत
के कहि सकैए!

•

प्रेम-41

अहाँसँ दूर रहि
अन्ततः हम दण्ड
स्वयं अपना आपकेँ
दैत छी
अहाँसँ
बात नहि करब
अहाँक भावक
उपेक्षा करब
अहाँकेँ देखियोकेँ
नजरअन्दाज करब
आखिरमे चोट
हमरे पहुँचबैत अछि

अहाँ जतेक बेर
हमर व्यवहारसँ
उपेक्षित होइत छी
हम ओतेक बेर
भीतरे-भीतर
टुटैत छी
नोर खसैत अछि
अहाँक आँखिसँ
आ तार-तार होइत अछि
हमर हृदय

सत कही तऽ
हम अहाँसँ

बहुत प्रेम करैत छी
एतेक प्रेम
जे अहाँक लगो-पास
ककरो आनकेँ
देखि नहि पबैत छी हम
आ परिस्थितिवश
कियो आन
हमरासँ बेसी
जखन अहाँक
लग होइत अछि
तऽ घायल शेरनी सन
ई हृदय
प्रतिकार करबा पर
उतारू भऽ उठैत अछि
जखन कि
एकरा पता छैक
एहिमे अहाँक
कोनो दोष नहि!

•